बाल-विज्ञान

नैतिक शिक्षा भाग-4

लेखक :

प.पू. विश्वहितैषी, राष्ट्रसंत, गणाचार्य, युगप्रमुख श्रमणाचार्य,

श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज

प्रकाशन :

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ

जैन कीर्तिस्तम्भ, बस स्टैण्ड रोड, भिण्ड (म.प्र.)

प्रसंग : परम पूज्य निमित्तज्ञानी आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज की 'रजत पुण्यतिथि वर्ष' के तथा प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के '27वें आचार्य पदारोहण' के अवसर पर

कृति : बाल विज्ञान नैतिक शिक्षा भाग-4

कृतिकार : प.पू. गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज

संस्करण : द्वितीय, 2018

प्रतियाँ : 1000

मूल्य : /-

मुद्रक : नवजीवन प्रिन्टर्स, निवाई (टोंक-राज.)
मो.: 9414348316, 9269000227
E-mail : navjeewan.jain@gmail.com

प्राप्ति स्थान :

1. श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ चैत्यालय मंदिर बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र) सम्पर्क सूत्र-पं.वीरेन्द्र जैन मो. 9754803232
2. आचार्य श्री विरागसागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज) पुष्प विहार कॉलोनी बीना-470113 जिला-सागर (म.प्र.) मो. 9425135816
3. विराग फाउण्डेशन सी/ओ, श्री अरुण कोटडिया, 11-ए विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुर, अहमदाबाद-380013 (गुजरात) मो. 9825900124
4. श्री भूपेन्द्र शांतिलालशाह 13, वृंदावन सोसायटी, डेरी रोड़, मेहसाना-2 (गुज.) मो. 9898494914, 9829452020
5. विराग महिला मंच, बोरीवली, मुम्बई (महा.)
6. पुष्पा जी, जयपुर (राज.)
7. पंकज जैन, विराग युवा मंच, इंदौर (म.प्र.)

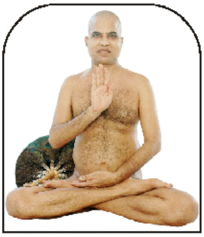

जीवन की महत्वपूर्ण झांकियाँ
परम पूज्य गणाचार्य
108 श्री विरागसागर जी महाराज

पूर्व नाम	:	अरविन्द जैन (टिन्नू)
जन्म	:	2 मई, 1963, गुरुवार (वैशाख शुक्ला 9, सवंत् 2020, पथरिया)
माता-पिता	:	श्रीमती श्यामादेवी जैन (समाधिस्थ पू. श्रमणी आर्यिका विशांतश्री माताजी) श्री कपूरचन्दजी जैन (समाधिस्थ पू. श्रमण श्री 105 विश्ववंद्य सागरजी)
बहिन	:	श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई	:	श्री विजयकुमार, श्री सुरेन्द्रकुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्र भैयाजी
लौकिक शिक्षा	:	इण्टर, मध्यमा (पथरिया, श्री शांति निकेतन दि. जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी (म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा	:	20 फरवरी 1980 (फाल्गुन शु. 5 सं. 2036 बुढ़ार, शहडोल (म.प्र.)
नामकरण	:	पूज्य क्षु. श्री 105 पूर्णसागरजी महाराज
क्षु. दीक्षा गुरु	:	प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी
मुनि दीक्षा	:	9 दिसम्बर 1983 (मंगसर शु. 5 वि.सं., 2040), औरंगाबाद (महा.)
मुनि दीक्षा गुरु	:	प.पू. निमित्तज्ञानी आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज
आचार्य पद	:	8 नवम्बर 1992 (का.शु. 13 वि.सं 2049) रविवार, द्रोणगिरी सिद्ध क्षेत्र (म.प्र.)
संयमी सृजन	:	आचार्य-9, मुनि-81, गणिनी आर्यिका-4, आर्यिका-68, ऐलक-5, क्षुल्लक-27, क्षुल्लिका-29, कुल-223
प्रशिष्य	:	150 से अधिक

समाधि सल्लेखनाएँ- लगभग 107 एवं अनेक तिर्यंच प्राणी

चातुर्मास : 1980 से 2018 तक क्रमशः दुर्ग (छत्तीसगढ़), कारंजा लाड (महाराष्ट्र), कारंजालाड (महाराष्ट्र), नागपुर (महाराष्ट्र), भावनगर (गुजरात), पाँचवा (राज.), निमाज (राज.), जयपुर (राज.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), बीना (म.प्र.), ललितपुर (म.प्र.) मढ़ियाजी (जबलपुर म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), शिखरजी (झारखण्ड), गया (बिहार), श्रेयांसगिरि (म.प्र.) भिलाई (छत्तीसगढ़), कारंजालाड (महा.), मूडबिद्री (कर्नाटक), मेलचित्तामूर (तमिलनाडू), उद्गांव (महा.), मुम्बई (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.), श्रेयांसगिरी (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), गाजियाबाद कविनगर (उ.प्र.), सम्मेद शिखरजी (झारखण्ड)

साहित्य सृजनः 1. बारसाणुवेक्खा ग्रन्थ पर 1100 पृष्ठीय 'सर्वोदया संस्कृत टीका'

2. रयणसार ग्रन्थ पर 1500 पृष्ठीय 'रत्नत्रयवर्धिनी' संस्कृत टीका एवं लिंगपाहुड़ पर 'श्रमण प्रबोधनी' शीलपाहुड पर 'श्रमणसम्बोधिनी' टीका लेखन जारी है,

3. अनेक शोधात्मक, चिन्तनशील, बालकोपयोगी कथा, अनुवाद, गद्य, संपादित साहित्य, जीवनी एवं प्रवचन साहित्य 150 से अधिक ग्रंथ।

4. शास्त्रकार समुच्चय ग्रंथ पर संस्कृत मे चर्णिसूत्र

5. प्राकृत भक्तियाँ

पंचकल्याणक : लघु वृहद् मिलाकर 75

उपाधियाँ : डॉक्ट्रेट आदि 50 से अधिक

सिद्धान्त वाचनाएँ: धवल ग्रन्थ की 16 पुस्तकें तथा जयधवल ग्रंथ की 7 पुस्तकें। (क्रम जारी है)

गोष्ठियाँ : विद्वत, शिक्षक, प्राचार्य, न्यायाधीश-वकील, डॉक्टर्स, शासनिक, सर्वधर्म सम्मेलन।

अहिंसा, शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति अभियानः भिण्ड (म.प्र.) बीना (म.प्र.), भिलाई (छ.ग.) कारंजा (महा.) मेलचित्तामूर (तमिल) उद्गाँव (महा.) गाँधीनगर (गुजरात) लोहारिया (राज.) अजमेर (राज.) जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.) श्रेयांसगिरी (म.प्र.) पथरिया (म.प्र.) भिण्ड (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), गाजियाबाद (उ.प्र.) सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) जिसमें 25 लाख से अधिक छात्र-छात्रायें व्यसनमुक्त शाकाहारी एवं अहिंसा के उपासक बन चुके हैं।

शिविर : प्रतिवर्ष श्री विराग सम्यग्ज्ञान शिविर, प्रतिभा संस्कार शिविर, पूजन प्रशिक्षण शिविर, भक्तामर शिविर, श्रावकसंस्कार शिविर आदि।

विशेष प्रवचन : कॉलेज, स्कूल, जेल, न्यायालय, गौशाला, वृद्धाश्रम, मुख्य चौराहे आदि पर हुए।

जेल प्रवचन : भिण्ड, टीकमगढ़, दुर्ग, उदयपुर, चित्तौडगढ़, जयपुर, अजमेर, इन्दौर, पन्ना, दमोह, दिल्ली, भिण्ड।

न्यायालय प्रवचनः अजमेर, भिण्ड

पगविहार : 1,00,000 किलोमीटर से अधिक।

संघ सम्मेलन : भिण्ड, श्रेयांसगिरी, बीना, ललितपुर, श्रवणबेलगोला, औरंगाबाद, जयपुर, झाँसी।

वृहत यति सम्मेलन एवं युगप्रतिक्रमण : जयपुर (राज. 2012), झांसी (करगुवा) (उ.प्र. 2017) (200 शिष्य, प्रशिष्य, अन्य साधु भी) श्रमण-श्रमणी की प्राचीन परम्परा की पुनः स्थापन।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
	दो शब्द	7
	श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ परिचय	8
	गुरुवाणी	9
	प्रार्थना	10
1.	पंचकल्याणक	11
2.	समवशरण	17
3.	जिनवाणी	
4.	अनुयोग	23
5.	भगवान महावीर की आचार्य और श्रुतपरम्परा	28
6.	श्री सुप्रभात स्तोत्र	31
7.	श्री महावीराष्टक स्तोत्र	34
8.	तीर्थंकर शांतिनाथ	36
9.	इष्ट छत्तीसी	38
10.	पूजा	46
11.	आचार्य वन्दना	53
	गुरु वंदना	57

दो शब्द

जिज्ञासा के पंखों पर सवार बालमन अपने कल्पना लोक में उड़ना चाहता है। यदि ऐसा हो सकता तो, अभिभावक उसके तर्कात्मक प्रश्नों की झड़ी से बचकर कुछ राहत जरुर अनुभव कर पाते। पर बालक है तो ऐसा, कि प्रश्न पर तर्क पर तर्क दागता ही चला जाता हैं। वस्तुतः यह उसकी आन्तरिक मन की उत्सुकता है जिससे वह अपने दृश्य जगत के सभी घटकों की तथ्यात्मक जानकारी पल भर में समेट लेना चाहता है। अपनी क्रिया में उसे बिलम्ब असह्य है। जीवन निर्माण की प्रक्रिया की नींव भरने का यह अनोखा समय है, जब हम चालकों के मन में धर्म संस्कारों की छाया और आस्था की भावना भर सकते हैं। जिससे उसका जीवन सुखमय हो सके। धर्म संस्कार हीन जीवन का विकास हुआ भी तो वह पशु से कुछ अधिक नहीं होगा। पशुता ही उसके जीवन की कहानी होगी जो सभ्य समाज के अन्तर को रह-रह कर बेंधती रहेगी।

जीवन निर्माण करना हमारे हाथों में है। थोड़ी सी सावधानी से वह महान् देवता बन सकता है और असावधानी से राक्षस। हिरण्यक शिशु और हिरण्य गर्भ में सिर्फ खरे और खोटे का ही अन्तर है। हिरण्य तो दोनों हैं।

बालकों के समुचित विकास को ध्यान में रखकर परमपूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने **बाल विज्ञान** की रचना करके भावी समाज निर्माताओं के जीवन में महान् उपकार किया है। अत्यन्त सरल सुबोध शैली में प्रश्नात्मक पद्धति से रचित इन चार भागों से बालकों को धर्मतत्व की गहरी जानकारी हो सकेगी। इससे वे अनावश्यक मानसिक श्रम से भी बच सकेंगे। महाराज श्री के इस उपकार के प्रति समाज भी सदैव कृतज्ञ रहेगी। **बाल विज्ञान** के तीन भाग प्रकाशित हो चुके हैं। सम्प्रति यह चौथा भाग आपके हाथों में सौंपते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है। इसके प्रकाशन में समस्त सहयोगी धन्यवाद के पात्र हैं आशा है कि आप इस परम्परा को आगे भी निर्वाह करते रहेंगे।

गुरुचरण सेवक - धन्यकुमार राजेश

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ परिचय

विद्यापीठ की स्थापना 1988 में हुई थी। इसका प्रारम्भ में अस्थाई संचालन कार्यालय जैन चैत्यालय मंदिर बताशा बाजार, भिण्ड में रखा गया था। लेकिन वर्तमान में स्टैण्ड रोड़, कीर्तिस्तंभ परिसर में एक विशाल भवन का निर्माण हो चुका है। इस विद्यापीठ की स्थापना दिगम्बर जैन समाज ने पूज्य आचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज के सदुपदेशों से प्रभावित होकर की है तथा यह एक संरक्षक मंडल के मार्गदर्शन में प्रबन्धकारिणी कमेटी द्वारा संचालित है कमेटी के चुनाव की विधिवत् व्यवस्था है। इसके संचालन में दिगम्बर जैन समाज के अतिरिक्त अन्य किसी वर्ग से या शासन से वित्तीय सहायता नहीं ली जाएगी।

विद्यापीठ का प्रमुख लक्ष्य जैन समाज को सुसंगठित करना, जैन आचार-धर्म संस्कृति एवं साहित्य का प्रचार-प्रसार करना, तद्नुरूप संस्थाओं की स्थापना एवं उनका संचालन करना (जैसे-प्रकाशन संस्थान, शोध संस्थान, छात्रावास, जैन विद्यालय, पाठशाला, व्रती आश्रम, जैन परीक्षा बोर्ड) प्रमुख लक्ष्य है जिससे जैन समाज की नई पीढ़ी धर्म संस्कारों से परिपूर्ण होकर धर्म, तीर्थ और व्रतियों की रक्षा का दृढ़ संकल्प लेकर समाज सेवा कर सके। निराश्रित भाई-बहनों एवं विधवा बहिनों की सहायता हेतु योजनाएँ प्रारम्भ करने के प्रस्ताव हैं। सम्प्रति विद्यापीठ के अन्तर्गत 15 पाठशालाएँ चल रही हैं जिनमें 1200 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड द्वारा परीक्षा की व्यवस्था हैं। अन्य पाठशालाओं को भी बोर्ड से संबद्ध होने की पूर्ण सुविधा हैं। सम्प्रति प्राइमरी, मिडिल एवं हाई स्कूलों के बच्चे उक्त संस्था में अध्ययनरत है।

विद्यापीठ प्रबन्धकारिणी अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार जैन एवं परम पूज्य बालयोगी, प्रज्ञाश्रमण आचार्य 108 विरागसागरजी महाराज के आशीर्वाद से इसकी व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क स्थापित करें। पाठशाला संचालक गण परीक्षा बोर्ड से संबद्धता हेतु शीघ्र आवेदन कर छात्रों को इस वर्ष परीक्षा में शामिल करें।

अध्यक्ष

वीरेन्द्र कुमार जैन

डोली रेडिमेड सदर बाजार, भिण्ड

गुरुवाणी

प्राचीन समय में हर मानव संस्कृति के अनुसार ही अपने जीवन को बनाता था, उस समय की गुरुकुल शिक्षाएँ थी। हर गुरुकुल में धर्म शिक्षा के साथ-साथ लौकिक शिक्षा दी जाती थी, ताकि विद्यार्थी अपने आपको पापाचरण से बचाकर सदाचार की ओर प्रवृत्त कर सकें। धर्माचरण पूर्ण शिक्षा ही प्राणियों को सुख शान्ति की जन्म जननी है।

बिना शिक्षा के सत्य ज्ञान नहीं हो सकता और सत्य ज्ञान के बिना जीवन पापाचरण से बचकर सुखी भी नहीं बन सकता-जब हम स्वयं सुखी नहीं बन पाये तो फिर परिवार, समाज, नगर, देश, राष्ट्र आदि को कैसे सुखी बना सकते हैं। अतः आज आवश्यकता है कि मानव मात्र अपने को धर्म ज्ञान एवं आचरण से सुसंस्कारित करें। ताकि वे स्वयं को सुखी बनाते हुए विश्व के प्राणी मात्र को सुखी बनाने में मार्ग दर्शक हों। ऐसे ही प्राणियों से परिवार, समाज, राष्ट्र आदि में सुख शान्ति की आशा हो सकती है, दूसरे से नहीं।

इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर इस कृति का सृजन किया गया है। विश्वास है कि बाल विज्ञान आबाल वृद्धों को नैतिकता की जागृति के साथ-साथ दीपिका का काम करेगी। सभी धर्म प्रेमी सज्जन पूर्ववत् इसका समादर करेंगे।

ऊँ नमः श्री वीतरागाय नमः

श्री जिन मुखोद्भव श्रुताय नमः

परम निर्ग्रन्थ गुरुभ्यो नमः

– गणाचार्य विराग सागर

प्रार्थना

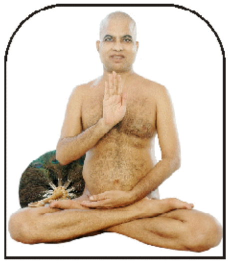

105 क्षु. श्री पूर्णसागर जी (आचार्य श्री विराग सागर जी)

पंच प्रभु को नमन करेंगे, भजन करेंगे जपन करेंगे।
कर्त्तव्यशील हम सदा बनेंगे, सत्पुरुषों का मार्ग गहेंगे।।

सूर्योदय से पूर्व उठेंगे, उठते ही प्रभु नाम भजेंगे।
दिया हुआ फिर पाठ करेंगे, तदनंतर गृह कार्य करेंगे।।

जिनेन्द्र प्रभु का दर्श करेंगे, गुरुजन का सम्मान करेंगे।
अनछना जल काम न लेंगे, रात्रि भोजन त्याग करेंगे।।

खूब पढ़ेंगे मनन करेंगे, कभी किसी से नहीं लड़ेंगे।
व्यर्थ कभी नहीं बात करेंगे, दिया हुआ नित पाठ पढ़ेंगे।।

सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे, कभी किसी से नहीं डरेंगे।
गाली मुख से कभी न देंगे, मैत्री सब से नित्य करेंगे।।

निंदा किसी की नहीं करेंगे, पापों का हम त्याग करेंगे।
ब्रह्मचर्य व्रत हृदय धरेंगे, लालच से प्रभु दूर रहेंगे।।

सरल सत्य व्यवहार करेंगे, णमोकार नित जाप करेंगे।
सदाचार रसपान करेंगे, 'शीघ्र पूर्ण' भगवान बनेंगे।।

पाठ-1

पंचकल्याणक

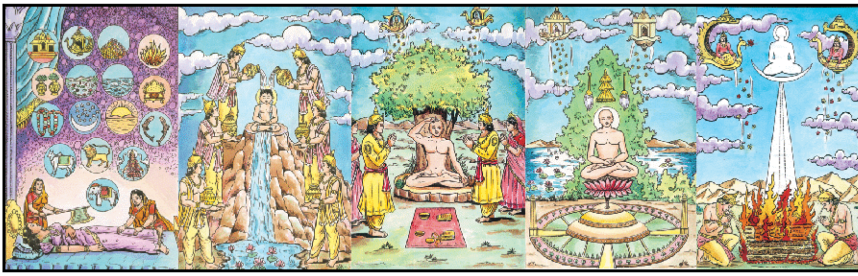

प्रश्न 1. कल्याणक किसे कहते हैं?

उत्तर - तीर्थंकरों के जीवन में कुछ प्रसिद्ध अवसर ऐसे आते है जो जगत् के लिए कल्याणकारी होते हैं उन्हे कल्याणक कहते हैं।

प्रश्न 2. कल्याणक कितने व कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर - कल्याणक 5 होते है- गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक, दीक्षा कल्याणक, ज्ञानकल्याणक, मोक्ष कल्याणक।

प्रश्न 3. गर्भकल्याणक किसे कहते हैं?

उत्तर - तीर्थंकरों के गर्भ में आने के पूर्व तथा पश्चात् होने वाले उत्सव को गर्भकल्याणक कहते हैं।

प्रश्न 4. गर्भकल्याणक कौन-किस प्रकार मनाते हैं?

उत्तर - सौधर्म इन्द्रादि सभी देव मुख्यतः गर्भकल्याणक का उत्सव मनाते है वे सौधर्म की आज्ञा से कुवेर प्रतिदिन उनके पिता के महल के आंगन में गर्भ के 6 माह पूर्व से एवं जन्म पर्यन्त 9 माह तक प्रतिदिन रत्नों की वर्षा करते हैं। 56 दिक्कुमारियाँ माता की सेवा करती है। तीर्थंकर की माता गर्भ वाले दिन से पूर्व रात्रि को 16 स्वप्न देखती है। भगवान का गर्भ में आना जानकर माता-पिता प्रसन्न होते हैं।

प्रश्न 5. कुवेर रत्नों की वर्षा कितने बार व कितनी करता है?

उत्तर - कुवेर 3 समय (बार) या 4 समय (बार) साढ़े तीन करोड़-साढ़े तीन करोड़ रत्नों की वर्षा प्रतिदिन करता है। अर्थात्-

1 दिन में - 10 ½ या 12 करोड़

30 दिन में (1 माह) - 315 करोड़ या 360 करोड़

15 माह में - 4725 करोड़ या 5400 करोड़

प्रश्न 6. दिक्कुमारियाँ कौन-कौन सी होती हैं?

उत्तर - वैमानिक देवों की - 12 देवी

ज्योतिषी देवों की - 2 देवी

भवनवासी देवों की - 20 देवी

व्यन्तर देवों की - 16 देवी

कुलाचल पर्वत की - 6 देवी

प्रश्न 7. तीर्थंकर की माता कौन-कौन से सोलह स्वप्न देखती है?

उत्तर - 1. मुंह में प्रवेश करता वृषभ (गज) 2. बैल 3. सिंह 4. युगल माला 5. अभिषेक होती लक्ष्मी 6. पूर्ण चन्द्रमा 7. दैदीप्यमान सूर्य 8. 2 कलश 9. मछलियों का युगल 10. सरोवर 11. समुद्र 12. सिंहासन 13. देव विमान 14. नागेन्द्र भवन 15. रत्नों की राशि 16. निर्धूम अग्नि

प्रश्न 8. सोलह स्वप्नों का फल कौन बताते हैं?

उत्तर - तीर्थंकर के पिता सोलह स्वप्नों का फल बताते है। उसके बाद सौधर्म इन्द्र आकर सभी देवों के साथ माता-पिता की पूजा करते हैं। भगवान को स्मरण कर माता-पिता की 3 प्रदक्षिणा लगाकर देव-देवियों को सेवा में नियुक्त कर यथास्थान चले जाते हैं।

प्रश्न 9. जन्मकल्याणक किसे कहते हैं?

उत्तर - तीर्थंकर के जन्म का उत्सव जन्मकल्याणक कहलाता है।

प्रश्न 10. तीर्थंकर के जन्म होने पर क्या-क्या घटनायें होती हैं?

उत्तर - 1. तीर्थंकर का जन्म होते ही भवनवासी देवों के भवनों में-शंखनाद। व्यन्तरों देवों के भवनों में भेरी नाद। ज्योतिषी देवों के भवनों में सिंहनाद तथा कल्पवासियों के विमान में घंटानाद स्वयमेव होने लगते हैं।

2. इन्द्रों के आसन कम्पायमान हो जाते है जिससे वे तीर्थंकर के जन्म का निश्चयकर सात कदम आगे बढ़कर उन्हें परोक्ष नमस्कार करते हैं।

प्रश्न 11. सौधर्म इन्द्र नमस्कार कर क्या करता हैं?

उत्तर - सौधर्म इन्द्र कुबेर को नगरी की अद्‌भुत शोभा करने की आज्ञा देता है और स्वयं देवपरिवार के साथ बड़ी धूमधाम से जन्मोत्सव मनाने पृथ्वी पर आते हैं।

प्रश्न 12. क्या स्वर्गों के सभी इन्द्र जन्मोत्सव मनाने आते हैं?

उत्तर - नहीं, केवल अच्युत स्वर्ग तक के देव-देवियां ही जन्मोत्सव मनाने आते हैं शेष ऊपर के देव नहीं आते हैं।

प्रश्न 13. तीर्थंकर का जन्मोत्सव सौधर्म इन्द्र कैसे मनाता हैं?

उत्तर - 1. सौधर्म इन्द्र सर्वप्रथम नगरी की 3 प्रदक्षिणा करता है तथा

2. शची इन्द्राणी को प्रसूति ग्रह में भेज कर माता को मायामयी निद्रा मे सुलाकर मायामयी बालक रखकर तीर्थंकर बालक को लाने की आज्ञा देता है।

3. तीर्थंकर बालक को शची, शौधर्म इन्द्र की गोद में देती है तब वह अपने एक हजार नेत्र बनाकर भी उनके सौन्दर्य से संतुष्ट नहीं होता।

4. बालक को ऐरावत हाथी पर बैठाकर सुमेरूपर्वत की पाण्डुक शिला पर, देवों द्वारा क्षीरसागर से लाए गए जल के 1 हजार 8 कलशों से जन्माभिषेक करता है पश्चात् विश्वशांति के लिए प्रभु के सिर पर शांतिधारा करता है।

5. सौधर्म इन्द्र भगवान के दाये पैर के अंगूठे में चिह्न देखकर उनका नामकरण करता हैं।

6. बालक तीर्थंकर को वस्त्राभूषण से अलंकृत कर नगर में प्रवेश करता है तथा बालक, माता-पिता को सौंप कर अद्‌भुत ताण्डव नृत्य व आनंद नाटक कर उत्सव मनाकर देवपुरी वापिस चला जाता है।

7. तीर्थंकर बालक के अंगूठे में अमृतान्यास कर देवों को सेवा मे नियुक्त करता है।

प्रश्न 14. ऐरावत हाथी कौन सी गति का जीव होता है कैसा होता है?

उत्तर - ऐरावत हाथी देवगति के ही सौधर्मइन्द्र का दक्षिणेन्द्र स्वयं बनता है जो दूध की तरह धवल वर्ण का विचित्र होता है।

प्रश्न 15. ऐरावत हाथी ही विशेषतायें बताइये?

उत्तर -	ऐरावत हाथी का विस्तार	-	1 लाख योजन (अधिकतम)
	उसके मुख	-	32
	दांत	-	1-1 मुख में 4-4
	सरोवर	-	1-1 दांत में 1-1
	कमलवन खण्ड	-	1-1 सरोवर में1-1
	महापद्म	-	1-1 वनखण्ड में 32-32
	नाट्‌यशाला	-	1-1 महापद्म में 1-1
	अप्सरा	-	1-1 नाट्‌यशाला में 32-32

प्रश्न 16. क्षीरसागर के जल की क्या विशेषता?

उत्तर - क्षीरसागर पांचवें नम्बर का समुद्र है जिसमें दो इन्द्रिय आदि त्रस जीव नहीं पाये जाते हैं।

प्रश्न 17. जन्माभिषेक के कलश कितने बड़े-बड़े होते हैं?

उत्तर - 1-1 कलश का मुख - 1 योजन = 4 कोस = 8 मील = 12 कि.मी.

गहराई (पेट) - 4 योजन = 16 कोस = 32 मील = 48 कि.मी.

ऊँचाई - 8 योजन = 32 मील = 64 मील = 96 कि.मी.

प्रश्न 18. तीर्थंकर बालक के वस्त्राभूषण कौन-कहाँ से लाता हैं?

उत्तर - सौधर्मइन्द्र स्वयं स्वर्गों में स्थित मानस्तम्भों में लटकते हुए दिव्य पिटारों से वस्त्राभूषण लाता हैं।

प्रश्न 19. दीक्षा कल्याणक किसे कहते हैं?

उत्तर - राजवैभव का भोग करते हुये अचानक किसी कारण के मिलने पर उन्हें वैराग्य होता है, वैराग्य होते ही लौकान्तिक देव आकर वैराग्य की प्रशंसा व अनुमोदना करते हैं, तीर्थंकर राज वैभव त्यागने को तैयार होते हैं तब दीक्षा के अवसर पर होने वाला उत्सव दीक्षा कल्याणक कहलाता है।

प्रश्न 20. वैराग्य होने के बाद वे दीक्षा कैसे लेते हैं?

उत्तर - सौधर्मइन्द्र अभिषेक कर वस्त्राभूषणों से अलंकृत करता है प्रभु कुबेर निर्मित पालकी में स्वयं बैठते हैं। पालकी को प्रथम मनुष्य कुछ दूरी तक लेकर चलते हैं फिर देव उसे आकाशमार्ग से ले जाते हैं तपोवन में पहुँचकर प्रभु वस्त्राभूषणों का त्यागकर, कैशलोंच करके दिगम्बर मुद्रा धारण करते है। तथा 2-3 उपवास का नियम लेकर "नमः सिद्धेभ्यः" कहकर स्वयं दीक्षा ले लेते हैं। उनके गुरु नहीं होते क्योंकि वे स्वयंभू होते हैं।

प्रश्न 21. दीक्षा के बाद क्या होता है?

उत्तर - दीक्षा लेते ही महामुनिराज को चौथा मनःपर्यय ज्ञान प्रकट होता है। जब तक केवलज्ञान नहीं हो जाता तब तक मौन तप साधना में लीन रहते हैं। उपवास का नियम पूरा होने पर विधिपूर्वक आहार (खीरान्न का) लेते हैं। दाता के घर पञ्चाश्चर्य होते हैं।

प्रश्न 22. केवलज्ञान कल्याणक किसे कहते हैं?

उत्तर – यथाक्रम ध्यान साधना करते-करते जब महामुनिराज को शुक्लध्यान के द्वारा श्रेणी आरोहण करते हुए चारघातिया कर्मों के नष्ट होने पर केवलज्ञान सहित अनंतचतुष्टय की प्राप्ति होती है। तब देव आकर इस अवसर पर समवशरण आदि विभूति की रचनाकर जो उत्सव मनाते हैं वह ज्ञानकल्याणक कहलाता है। केवलज्ञान प्रकट होने के बाद तीर्थंकर प्रभु द्वारा धर्मतीर्थ की स्थापना होती है। वे प्राणियों के हितार्थ देश-देशान्तरों में जाकर प्राणिमात्र के पुण्य से मोक्ष व मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं। (विशेष कथन समवशरण पाठ में हैं)

प्रश्न 23. मोक्षकल्याणक किसे कहते हैं?

उत्तर – आयु कर्म पूर्ण होने के पूर्व भगवान योगनिरोध द्वारा ध्यान में निश्चललीन होते हैं जिसके अन्तर शेष 4 अघातिया कर्मों को नष्टकर वे विराजने लगते है। तब सौधर्मादि देव आकर मोक्ष जाने के अवसर पर जो उत्सव मनाते है उसे मोक्षकल्याणक कहते हैं।

प्रश्न 24. सौधर्म इन्द्र मोक्षकल्याणक कैसे मनाता है?

उत्तर – सौधर्मइन्द्र निर्वाणस्थल पर आकर परमौदारिक शरीर के शेष रहे नख-केशों को इकट्ठा करता है अथवा अपनी विद्या से भगवान के शरीर की पूर्ववत् रचनाकर यथास्थान नख-केशों को स्थापित कर देव निर्वाण कल्याणक की पूजा करते हैं। सौधर्मइन्द्र अपने वज्रमयी दण्ड से निर्वाणस्थल पर 卐 स्वस्तिक का चिह्न उकेरता है और देवपुरी चला जाता है।

प्रश्न 25. पंचकल्याणकों के उत्सव मनाने देव स्वयं आते हैं क्या?

उत्तर – नहीं, देव अपने मूल शरीर सहित सदैव यथास्थान पर ही रहते हैं विक्रिया के द्वारा उनके उत्तरशरीर उत्सवों में आते हैं।

प्रश्न 26. क्या सभी तर्थंकरों के 5 कल्याणक मनाये जाते हैं?

उत्तर – नहीं भरत तथा ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों के 5 कल्याणक होते हैं, विदेह क्षेत्र के तीर्थंकरों के या 3 या 2 कल्याणक भी होते हैं। (दीक्षा, ज्ञान, मोक्ष ये 3 या ज्ञान और मोक्ष ये 2)

प्रश्न 27. कौन से जीव तीर्थंकर बनकर 5 कल्याणक को प्राप्त करते हैं?

उत्तर – सम्यग्दर्शन से विशुद्ध, मनुष्यगति के जीव पूर्वभव में या उसी भव में, केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में बैठकर सोलहकारण भावनाओं के द्वारा तीर्थंकर प्रकृति बंध का प्रारंभ करते है। किन्तु ऐसे नरक, देव गति के जीव भी जिन्होंनें पूर्व मनुष्य भव में तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया हो? प्रकृति बंध वाले हो सकते है।

प्रश्नावली

1. कल्याणक किसे कहते हैं व कितने होते हैं?

2. रत्नों एवं देवियों की संख्या बताये?

3. ऐरावत हाथी एवं कलश का विस्तार सहित वर्णन करें?

4. पंचकल्याणक मनाने कौन से देव आते हैं?

5. क्या सभी तीर्थंकरों के 5 ही कल्याणक होते है या नहीं?

✪✪✪✪✪

पाठ - 2

समवशरण

प्रश्न 1. समवशरण किसे कहते हैं?

उत्तर - तीर्थंकर भगवान की प्रवचन सभा को समवशरण कहते हैं।

प्रश्न 2. समवशरण की रचना कौन करता है?

उत्तर - समवशरण की रचना सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर करता है।

प्रश्न 3. कुबेर कौन है?

उत्तर - कुबेर सौधर्म इन्द्र का खजांची है जिसे धनपति भी कहते हैं।

प्रश्न 4. कुबेर समवशरण की रचना किन-किन पदार्थों से करता है?

उत्तर - कुबेर दिव्य बहुमूल्य रत्नों से समवशरण की रचना करता है।

प्रश्न 5. समवशरण की रचना जमीन पर होती है या आकाश में?

उत्तर - जमीन से 5000 धनुष ऊपर आकाश में वृत्ताकार (गोल) समवशरण की रचना होती है।

प्रश्न 6. समवशरण की आधारशिला किसकी होती है?

उत्तर - समवशरण की आधारशिला इन्द्रनीलमणि रत्न की होती है।

प्रश्न 7. समवशरण में कितनी सीढ़ियाँ होती है?

उत्तर - समवशरण में चारों दिशाओं में 20,000-20,000 सीढ़ियाँ होती हैं।

प्रश्न 8. समवशरण में कितनी भूमियाँ होती हैं?

उत्तर - समवशरण में निम्न आठ भूमियाँ होती है :

(1) चैत्यप्रसाद भूमि (2) खातिका भूमि (3) लतावन भूमि (4) उपवनभूमि (5) ध्वजाभूमि (6) कल्पवृक्ष भूमि (7) भवनभूमि (8) श्रीमण्डप भूमि।

प्रश्न 9. समवशरण में कितने कोट होते हैं?

उत्तर - समवशरण में 4 कोट होते हैं।

प्रश्न 10. समवशरण में कितनी वेदी होती है?

उत्तर - समवशरण में 5 वेदी होती है।

प्रश्न 11. कोट व वेदी में क्या अंतर है?

उत्तर - कोट में कंगूरे होते हैं जबकि वेदी में कंगूरे नहीं होते हैं।

प्रश्न 12. अष्टभूमियों में कोट व वेदी का क्रम क्या है?

उत्तर - समवशरण में सारी रचना सामान्य धरातल से 5000 धनुष ऊपर होती है। 20,000 सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद सर्वप्रथम धूलिसाल नामक प्रथम कोट होता है, उसके बाद पहली चैत्यप्रसाद भूमि होती है फिर प्रथम वेदी होती है। उसके बाद दूसरी खातिका भूमि होती है फिर द्वितीय वेदी होती है। उसके बाद लताभूमि होती है फिर द्वितीय कोट होता है। उसके बाद चौथी उपवनभूमि होती है फिर तृतीय कोट होता है। उसके बाद पांचवी ध्वजभूमि होती है फिर तृतीय वेदी होती है। उसके बाद छठी कल्पवृक्ष भूमि होती है फिर चतुर्थ वेदी होती है। उसके आगे सातवीं भवनभूमि होती है फिर चतुर्थ कोट होता है। उसके आगे आठवीं श्रीमण्डप भूमि होती है फिर पंचम वेदी होती है। उसके ऊपर गंधकुटी होती है जिसमें तीन कटनी होती है।

प्रश्न 13. समवशरण का विस्तार कितना होता है?

उत्तर - विदेह क्षेत्र में तीर्थंकरों का सदैव 12 योजन तथा भरत और ऐरावत क्षेत्र में 12 योजन से लेकर (घटकर) 1 योजन तक वृद्धि-हानि होती है।

प्रश्न 14. समवशरण में सभा कहाँ होती है?

उत्तर – समवशरण में श्रीमण्डप नामक आठवीं भूमि में 12 सभायें होती है।

प्रश्न 15. बारह सभाओं में बैठने का क्रम क्या है?

उत्तर – तीर्थंकर भगवान के दायीं ओर से क्रम प्रारंभ होता है। वह निम्न है – 1. गणधर आदि मुनिगण, 2. कल्पवासी देवियाँ, 3. आर्यिका व श्राविका, 4. ज्योतिषी देवियाँ, 5. व्यन्तर देवियाँ, 6 भवनवासी देवियाँ, 7. व्यन्तर देव, 8. ज्योतिषी देव, 9. भवनवासी देव, 10. कल्पवासी देव, 11. चक्रवर्ती आदि मनुष्य, 12. तिर्यंच।

प्रश्न 16. क्या सभी प्राणी कोठों में बैठकर उपदेश सुन सकते हैं?

उत्तर – नहीं, केवल जो भव्य, संज्ञी और सम्यग्दृष्टि हैं उन्हें ही यह सौभाग्य मिलता है। शेष अभव्य, मिथ्यादृष्टि तो समवशरण के वैभव को ही देखने में लगे रहते हैं। भव्यकूट नाम के स्तूप जो सातवीं भूमि में रहते हैं उन्हें तो अभव्य जीव देख ही नहीं सकते।

प्रश्न 17. समवशरण में भगवान कहाँ विराजते हैं?

उत्तर – 12 सभाओं (कोठों) के बाद वेदी पर तीन कटनी होती है। जिसमें तीसरी कटनी के ऊपर गंधकुटी होती है उस पर स्वर्ण रत्नमय सिंहासन होता है जिससे 4 अंगुल ऊपर अधर आकाश में 8 प्रातिहार्यों सहित भगवान विराजते हैं।

प्रश्न 18. समवशरण की क्या-क्या महिमा होती है?

उत्तर – (1) समवशरण में यद्यपि सम्यग्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि सभी जा सकते हैं किन्तु बारह सभाओं में केवल सम्यग्दृष्टि जीव ही जाते हैं। (2) प्रत्येक तीर्थंकर के समवशरण में सभी जीव श्रद्धावनत् रहते हैं। (3) कोठों के क्षेत्रफल की अपेक्षा बैठने वालों का क्षेत्रफल असंख्यात गुणा है फिर भी वे जीव जिनेन्द्रदेव के माहात्म्य से एक-दूसरे से अस्पृष्ठ रहते हैं। (4) जिनेन्द्र देव के माहात्म्य से बालवृद्ध, लंगड़े सभी आसानी से अंतरमुहूर्त में 20,000 सीढ़ी चढ़ जाते हैं। (5) समवशरण में अंधे, मंद दृष्टि को भी दिखने लगता है। (6) समवशरण में रोगी, आपत्ति, विपत्ति, रोग, मरण, वैर।

प्रश्न 19. हितोपदेशी किसे कहते हैं?

उत्तर – जो संसार के समस्त प्राणियों के हितकारी, कल्याणमयी उपदेश देते हैं उन्हें हितोपदेशी कहते हैं।

प्रश्न 20. भगवान क्या उपदेश भी देते हैं?

उत्तर – हाँ, भगवान भी उपदेश देते हैं।

प्रश्न 21. जैसे अन्य लोग उपदेश देते हैं वैसे ही भगवान उपदेश देते हैं या उनके उपदेश में कोई विशेषता है?

उत्तर – ध्यान रखो! अन्य लोगों की तरह भगवान उपदेश नहीं देते हैं अपितु उनके उपदेश में विशेषता पायी जाती है।

प्रश्न 22. भगवान के उपदेश में क्या विशेषता पायी जाती है?

उत्तर – अन्य लोग जैसे मुख, ओंठ, दांत, तालू, कंठ, मूर्धा, नासिका आदि के माध्यम से उपदेश देते हैं वैसे भगवान उपदेश नहीं देते अपितु उनका तो बिना ओंठ आदि के चलाये, सर्वांग शरीर से दिव्य ध्वनि के रूप में होता है।

प्रश्न 23. फिर तो आवाज निकल सकती है पर शब्द नहीं निकलेंगे?

उत्तर – हाँ, आवाज निकलती है पर शब्द नहीं निकलते हैं। तभी तो वह सर्वभाषामयी होती है और उसे हम निरक्षरी कहते हैं।

प्रश्न 24. निरक्षरी भाषा समझ में कैसे आ सकती है?

उत्तर – यही तो वहाँ का (उसका) अतिशय है कि निरक्षरी होते हुए भी सुनने वालों के कानों तक जाते-जाते उसकी भाषा परिवर्तित हो जाती है अर्थात् हिन्दी भाषा वालों को हिन्दी में, प्राकृत भाषा वालों को प्राकृत में, संस्कृत भाषा वालों को संस्कृत में, अंग्रेजी भाषा वालों को अंग्रेजी में, कन्नड़ भाषा वालों को कन्नड़ में, मराठी भाषा वालों को मराठी में, तमिल भाषा वालों को तमिल में, तेलगू भाषा वालों को तेलगू में, पंजाबी भाषा वालों को पंजाबी में, उर्दू भाषा वालों को उर्दू में आदि।

प्रश्न 25. लेकिन क्या ये संभव है?

उत्तर - हाँ, पहले ऐसा प्रश्न वैज्ञानिकों को भी हुआ था किन्तु शोध-खोज के बाद उन्होंने स्वीकार किया कि ये संभव है और उन्होंने भाषा परिवर्तन यंत्रों (Sinulta nuous Interpretorion System) का आविष्कार कर विश्व को दिखा दिया कि एक भाषा को हम अनेकों भाषा में परिवर्तित कर सकते हैं। पर अंतर इतना है कि यंत्र, व्यक्ति विशेष की इच्छा तथा प्रयोगानुसार भाषा परिवर्तित करते हैं किन्तु समवशरण में यह प्रक्रिया सहज होती है इसलिये इसे दिव्यध्वनि प्रातिहार्य कहते हैं।

प्रश्न 26. भगवान की दिव्यध्वनि प्रार्थना पर खिरती है या सहज ही?

उत्तर - प्रात:, मध्यान्ह, सायं और अर्द्धरात्रि की संधि बेला में तो सहज ही नियम से खिरती है। अन्य समय भी भव्य जीव के पुण्ययोग से खिरती है।

प्रश्न 27. चारों संधि कालों में कितने समय तक भगवान की दिव्यध्वनि खिरती है?

उत्तर - छ:-छ: घड़ी तक अर्थात् प्रत्येक संधि काल में 6-6 घड़ी तक भगवान की दिव्यध्वनि खिरती है।

प्रश्न 28. घड़ी क्या है?

उत्तर - घड़ी, यह समय का माप है।

प्रश्न 29. एक घड़ी कितने समय की होती है?

उत्तर - 24 मिनिट की एक घड़ी होती है।

प्रश्न 30. अन्य समयों में जो दिव्यध्वनि खिरती है वह प्रश्नकर्ता की प्रार्थना पर खिरेगी तो भगवान का उसके प्रति राग माना जायेगा?

उत्तर - नहीं, क्योंकि राग, मोहनीय कर्म का भेद है जबकि मोहनीय आदि चार घातिया कर्मों का क्षय होने पर ही केवलज्ञान उत्पन्न हो सकता है, इसके बिना नहीं। अत: दिव्यध्वनि प्रश्नकर्ता के प्रति राग से नहीं किन्तु उसके भाग्य से खिरती है।

प्रश्न 31. भगवान की वाणी में और क्या-क्या विशेषता होती है?

उत्तर - भगवान की वाणी-जिनवाणी पूर्वापर (आगे-पीछे आने वाले) दोषों से रहित होती है। अनुलंघनीय होती है कोई उसका खण्डन नहीं कर सकता है। विपरीत कथन से रहित होती है। तत्त्वों का उपदेश करने वाली है। सारभूत होती है। जिनवाणी के अध्ययन से मन दुर्ध्यान से हटकर धर्मध्यान में लगता है। परिणाम विशुद्ध होते हैं जिससे असंख्यातगुणी कर्मों की निर्जरा होती है। मन वश में हो जाता है। तत्-तत् विषयक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अज्ञानता दूर होती है। सम्यग्दर्शन प्राप्त तथा दृढ़ होता है। सम्यग्ज्ञान निर्मल होता है तथा चारित्र में विशुद्धता होती है आदि।

प्रश्नावली

1. **जिनेन्द्र भगवान व जिनवाणी किसे कहते हैं?**
2. **भगवान के उपदेश की विशेषताएँ बताएँ?**
3. **भगवान की दिव्यध्वनि कब तथा कितने समय तक खिरती है?**
4. **हितोपदेशी किसे कहते हैं?**
5. **जिनवाणी के अध्ययन से हमें क्या लाभ होता है?**

✪✪✪✪✪

पाठ - 3

जिनवाणी

प्रश्न 1. अनुयोग ि

उत्तर - सम्पूर्ण द्वादश

पाठ - 4

अनुयोग

प्रश्न 1. अनुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर – सम्पूर्ण द्वादशांग को जानने के लिए श्रुतज्ञान का जो ग्रंथों में विभाजन किया गया है उसे अनुयोग कहते हैं।

प्रश्न 2. अनुयोग कितने होते हैं?

उत्तर – अनुयोग चार प्रकार के होते हैं – प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग, द्रव्यानुयोग।

प्रश्न 3. प्रथमानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस ग्रंथ में चारों पुरुषार्थों का, किसी एक महापुरुष के चरित्र और तिरेसठ शलाका पुरुषों के चारित्र का वर्णन होता है जिनके पठन-पाठन आदि से पुण्य, बोधि और समाधि की प्राप्ति होती है ऐसे समीचीन ग्रंथों को प्रथमानुयोग कहते हैं।

प्रश्न 4. प्रथमानुयोग के ग्रंथ कौन-कौन से हैं?

उत्तर – आदिपुराण, महापुराण, चौबीसी पुराण, त्रेसठ शलाका पुरुष, पार्श्वपुराण, श्रेणिक चरित्र आदि।

प्रश्न 5. करणानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर – जो शास्त्र लोक और अलोक के विभाग को, युगों के परिवर्तन को, कर्मों और चारों गतियों की स्थिति आदि को दर्पण के समान निरुपण करते हैं उन्हें करणानुयोग कहते हैं।

प्रश्न 6. करणानुयोग के ग्रंथ कौन-कौनसे हैं?

उत्तर - तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, गोम्मटसार जीवकाण्ड-कर्मकाण्ड, लब्धिसार, क्षपणासार, धवला, महाधवला आदि।

प्रश्न 7. चरणानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर - जिन ग्रंथों में ग्रहस्थ और मुनियों के चारित्र की उत्पत्ति, वृद्धि और रक्षा का वर्णन किया गया है उन्हें चरणानुयोग कहते हैं।

प्रश्न 8. चरणानुयोग के ग्रंथ कौन-कौनसे हैं?

उत्तर - मूलाचार, आचारसार, रयणसार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, अनगार धर्मामृत, सागार धर्मामृत आदि।

प्रश्न 9. द्रव्यानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर - जिन ग्रंथों में जीव और अजीव आदि तत्त्वों का, पुण्य और पाप का, बंध और मोक्ष के कारणों का वर्णन किया जाता है उन्हें द्रव्यानुयोग कहते हैं।

प्रश्न 10. द्रव्यानुयोग के ग्रंथ कौन-कौनसे हैं?

उत्तर - समयसार, प्रवचनसार, द्रव्यसंग्रह, नियमसार, पञ्चास्तिकाय, परमात्मप्रकाश आदि।

प्रश्न 11. शलाकापुरुष किसे कहते हैं?

उत्तर - अंतिम कुलकर के पश्चात् पुण्योदय से भरतक्षेत्र में मनुष्यों में श्रेष्ठ और सम्पूर्ण लोक में प्रसिद्ध जो पुरुष उत्पन्न होते हैं वे शलाका पुरुष कहलाते हैं।

प्रश्न 12. शलाका पुरुष कितने होते हैं?

उत्तर - शलाका पुरुष 63 ही होते हैं।

प्रश्न 13. 63 शलाका पुरुष कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर - 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण

प्रश्न 14. कौन-कौन शलाका पुरुष किन तीर्थंकर के काल में उत्पन्न हुए?

उत्तर –	**तीर्थंकर**	**चक्रवर्ती**	**बलभद्र**	**नारायण**	**प्रतिनारायण**
1.	ऋषभनाथ (आदिनाथ)	भरत	–	–	–
2.	अजितनाथ	सगर	×	×	×
3.	संभवनाथ	×	×	×	×
4.	अभिनन्दन	×	×	×	×
5.	सुमति	×	×	×	×
6.	पद्मप्रभु (पद्मप्रभ)	×	×	×	×
7.	सुपार्श्वनाथ	×	×	×	×
8.	चन्द्रप्रभु (चन्द्रप्रभ)	×	×	×	×
9.	पुष्पदंत (सुविधिनाथ)	×	×	×	×
10.	शीतलनाथ	×	×	×	×
11.	श्रेयांसनाथ	×	[1]विजय	[3]त्रिपृष्ठ	[1]अश्वग्रीव
12.	वासुपूज्य	×	[2]अचल	[2]द्विपृष्ठ	[2]तारक
13.	विमलनाथ	×	[3]धर्म	[3]स्वयंभू	[3]मेरक
14.	अनंतनाथ	×	[4]सुप्रभ	[4]पुरुषोत्तम	[4]मधुकैटभ
15.	धर्मनाथ	[3]मधवा, [4]सनतकुमार	[5]सुदर्शन	[5]पुरुषसिंह	[5]निशम्भु
16.	शांतिनाथ	[5]शांतिनाथ	×	×	×
17.	कुन्थुनाथ	[6]कुन्थुनाथ	×	×	×
18.	अरहनाथ (अरनाथ)	[7]अरहनाथ, (अरनाथ) [8]सुभौम	[6]नंदी	[6]पुण्डरीक	[6]बलि
19.	मल्लिनाथ	[9]महापद्म	[7]नंदीमित्र	[7]दत्त	[7]प्रहरण
20.	मुनिसुव्रतनाथ	[10]हरिषेण	[8]रामचन्द्र	[8]लक्ष्मण	[8]रावण
21.	नमिनाथ	[11]जयसेन	×	×	×
22.	नेमिनाथ	[12]ब्रह्मदत्त	[9]बलदेव	[9]श्रीकृष्ण	[9]जरासंध
23.	पार्श्वनाथ	×	×	×	×
24.	महावीर स्वामी	×	×	×	×

प्रश्न 15. कौन शलाका पुरुष आयु पूर्ण कर कहाँ गए?

उत्तर - 24 तीर्थंकर-मोक्ष, 9 नारायण 9 प्रतिनारायण-नरक, 8 बलभद्र-मोक्ष, 1 बलदेव-स्वर्ग, 8 चक्रवर्ती-मोक्ष, 2 मधवा, सनतकुमार-स्वर्ग, 2 सुभौम, ब्रह्मदत्त-7वें नरक गए।

प्रश्न 16. लोक-अलोक किसे कहते हैं?

उत्तर - जहाँ जीवादि 6 द्रव्य पाई जाती है उसे लोक कहते हैं, तथा जहाँ मात्र एक आकाशद्रव्य होती है उसे अलोक कहते हैं।

प्रश्न 17. हम कहाँ रहते हैं?

उत्तर - हम लोकाकाश या लोक में रहते हैं।

प्रश्न 18. लोक कब से है और कब तक रहेगा?

उत्तर - लोक अनादिकाल से है और अनंतकाल तक रहेगा।

प्रश्न 19. लोक को किसने बनाया है? कौन संहार करेगा?

उत्तर - लोक को किसी ने नहीं बनाया है, न ही कोई उसका संहार करता है क्योंकि वह स्वप्रतिष्ठित है।

प्रश्न 20. युग किसे कहते हैं? इनमें परिवर्तन कैसे होता है?

उत्तर - 6 उत्सर्पिणी + 6 अवसर्पिणी काल को युग कहते हैं। 6 उत्सर्पिणी काल के बाद 6 अवसर्पिणी काल व्यतीत हो जाने पर प्रलयकाल आता है फिर पुनः उत्सर्पिणीकाल आता है इसे ही युगपरिवर्तन कहते हैं।

प्रश्न 21. कर्म किसे कहते हैं? कितने भेद होते हैं?

उत्तर - कार्मण वर्गणाओं के समूह को कर्म कहते हैं या संसारी जीवों को जिससे सुख-दुख होता है उसे कर्म कहते हैं। ये मुख्यतः 8 प्रकार के होते हैं। (1) ज्ञानावरणी (2) दर्शनावरणी (3) वेदनीय (4) मोहनीय (5) आयु (6) नाम (7) गोत्र (8) अंतराय।

प्रश्न 22. श्रावकों के कितने मूलगुण होते हैं?

उत्तर - 8 मूलगुण होते है :- (1) मद्य, मधु, मांस त्याग, 5 उदुम्बर त्याग (बड़, पीपल, ऊमर, कठूमर, अंजीर)।

(2) 5 अणुव्रत + 3 मकार त्याग।

(3) 3 मकार त्याग + 5 उदुम्बरफल त्याग + नित्यदेवदर्शन + जीवदया + पानी छानकर पीना + रात्रि भोजन त्याग।

प्रश्न 23. श्रावकों के 6 आवश्यक कौन-कौन होते हैं?

उत्तर - 1. देवपूजा, 2. गुरु उपासना, 3. स्वाध्याय, 4. तप, 5. दान, 6. संयम

प्रश्न 24. गृहस्थ श्रावकों की क्या पहिचान होती है?

उत्तर - अष्टमूलगुणधारी होना, यज्ञोपवीत धारण करना आदि।

प्रश्न 25. मुनियों/श्रमणों के कितने मूलगुण होते हैं?

उत्तर - मुनियों/श्रमणों के 28 मूलगुण होते हैं। (जिनके नाम इष्ट छत्तीसी पाठ नं. 8 में देखें)

प्रश्न 26. मुनियों की क्या पहचान होती है?

उत्तर - नग्न दिगम्बर रहना, केशलौंच करना, पिच्छी-कमण्डल रखना आदि मुनियों की पहचान होती है।

प्रश्नावली

1. अनुयोग किसे कहते हैं? भेद भी लिखें?
2. शलाका पुरुष किसे कहते हैं? संख्या बताइये?
3. लोक-अलोक किसे कहते हैं? इसे किसने बनाया?
4. प्रथमानुयोग-करणानुयोग, चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग में अंतर बताएँ?
5. कर्म किसे कहते हैं? भेद बताएँ?
6. श्रावकों-श्रमणों की क्या पहचान होती है? लिखें।

✪✪✪✪✪

पाठ - 5

भगवान महावीर की आचार्य एवं श्रुतपरम्परा

प्रश्न 1. श्रुत तथा श्रुतपरम्परा किसे कहते हैं?

उत्तर - जो सुना जाता है वह श्रुत कहलाता है। एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे ऐसे ही क्रमशः सुन-सुनकर (या सुनने का) जो क्रम बना रहा है वह श्रुतपरम्परा है।

प्रश्न 2. श्रुत कितने प्रकार का होता है?

उत्तर - श्रुत 2 प्रकार का होता है - (1) द्रव्यश्रुत (2) भावश्रुत

प्रश्न 3. द्रव्य तथा भावश्रुत किसे कहते हैं?

उत्तर - बारह अंग, चौदह पूर्व और 14 प्रकीर्णक स्वरूप वचनात्मक श्रुत को द्रव्यश्रुत कहते है। द्रव्यश्रुत के सुनने से उत्पन्न हुआ जो ज्ञान है वह भावश्रुत है।

प्रश्न 4. द्रव्यश्रुत की रचना कौन करते हैं?

उत्तर - द्रव्यश्रुत की मुख्य रचना (कथन) तीर्थंकर आदि सर्वज्ञ केवली अपनी दिव्यध्वनि से करते हैं। उसके बाद गणधर, उसके अनन्तर आचार्यगण रचना करते रहते हैं।

प्रश्न 5. केवली (सर्वज्ञ) किसे कहते हैं?

उत्तर - जो अपने केवलज्ञान के द्वारा समस्त लोकालोकवर्ती समस्त द्रव्यों की गुण व पर्यायों को एकसाथ जानते-देखते हैं वे सर्वज्ञ कहलाते हैं।

प्रश्न 6. क्या सर्वज्ञ भगवान जितना जानते हैं उतना ही कथन करते हैं?

उत्तर - नहीं, सर्वज्ञदेव जितना जानते हैं उसका अनंतवाँ भाग ही उनकी दिव्यध्वनि में वचनरूप से प्रगट होता है जितना वे कहते हैं उसका अनंतवाँ भाग ही गणधर सुन व समझ पाते हैं। जितना सुनते हैं उसके अनंतवें भाग का ही कथन कर पाते हैं।

प्रश्न 7. अनुबद्ध केवली किसे कहते हैं?

उत्तर - केवलज्ञानियों की परम्परा में एक भी दिन का विच्छेद हुए बिना जिनको केवलज्ञान प्रकट होता है वे केवली, अनुबद्ध केवली कहलाते हैं।

प्रश्न 8. श्रुतकेवली किसे कहते हैं?

उत्तर - जो 14 पूर्व व 11 अंगों (द्वादशांग) रूप समस्त श्रुतज्ञान को धारण करते वाले महार्षियों को श्रुतकेवली कहते हैं।

प्रश्न 9. केवली और श्रुतकेवली में क्या अंतर है?

उत्तर - (1) केवली केवलज्ञान के द्वारा सभी पदार्थों उनकी गुण पर्यायों को प्रत्यक्ष जानते हैं तथा श्रुतकेवली श्रुतज्ञान के द्वारा उन्हीं पदार्थों उनकी गुण-पर्यायों को परोक्ष जानते हैं। (2) केवली उस भव से मोक्ष जाते हैं किन्तु श्रुतकेवली जा भी सकते हैं और नहीं भी। (3) केवली का ज्ञान क्षायिक तथा श्रुतकेवली का ज्ञान क्षयोपाशमिक होता है।

प्रश्न 10. दशपूर्वी किसे कहते हैं?

उत्तर - विद्यानुवाद नामक दसवें पूर्व के पढ़ने से उत्पन्न हुई महारोहणी आदि लौकिक विद्याओं के प्रलोभन में पड़कर जो आत्म साधना में लीन रहते हैं ऐसे मुनि दशपूर्वी कहलाते हैं।

प्रश्न 11. एकादशांगधारी किसे कहते हैं?

उत्तर - जिन मुनिराजों को दृष्टिवाद अंग को छोड़कर शेष आचरण आदि 11 अंगों का ज्ञान होता है उन्हें एकादश अंगधारी कहते हैं।

प्रश्न 12. दश, नव, आठ और एक अंगधारी किसे कहते हैं?

उत्तर - (1) जिन मुनिराजों को आचारांग आदि 10 अंगों का श्रुत ज्ञान होता है वे दशांगधारी कहलाते हैं।

(2) जिन मुनिराजों को आचारांग आदि 9 अंगों का श्रुत ज्ञान होता है वे नवांगधारी कहलाते हैं।

(3) जिन मुनिराजों को आचारांग आदि 8 अंगों का श्रुतज्ञान होता है वे अष्टांगधारी कहलाते हैं।

(4) जिन मुनिराजों को आचारांग अंग का श्रुतज्ञान होता है वे एकांग या आचारांगधारी कहलाते हैं।

(5) जिन मुनियों को समस्त अंगों और पूर्वों का एकदेश ज्ञान होता है वे अंगांशधारी कहलाते हैं।

प्रश्न 13. श्रुतलेखन की परम्परा का आरम्भ सम्प्रति किसके द्वारा हुआ?

उत्तर - आचार्य धरसेन के द्वारा अध्ययन के पश्चात् आचार्य पुष्पदंत व भूतबली मुनिराजों द्वारा (बडखण्डागम ग्रन्थ लेखन से) श्रुतलेखन परम्परा का प्रारम्भ हुआ।

प्रश्न 14. यह आचार्य एवं श्रुतपरम्परा कौन से तीर्थंकर के काल की है?

उत्तर - अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के शासनकाल की यह श्रुत या आचार्य परम्परा है। इसे ही श्रमण परम्परा भी कहते हैं। श्रमण अर्थात् निर्ग्रन्थ आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी।

प्रश्न 15. आचार्य परम्परा एवं श्रुतपरम्परा के आचार्यों, उनके काल तथा श्रुतज्ञान का वर्णन करें?

उत्तर -

1.	**गौतम स्वामी**	**केवली**	**12 वर्ष**
2.	**सुधर्म स्वामी**	**केवली**	**12 वर्ष**
3.	**जम्बूस्वामी**	**केवली**	**38 वर्ष**
			62 वर्ष

4.	विष्णु आचार्य	श्रुतकेवली	14 वर्ष
5.	नन्दिमित्र आचार्य	श्रुतकेवली	16 वर्ष
6.	अपराजित आचार्य	श्रुतकेवली	22 वर्ष
7.	गोवर्धन आचार्य	श्रुतकेवली	19 वर्ष
8.	भद्रबाहु आचार्य	श्रुतकेवली	29 वर्ष
			100 वर्ष
9.	विशाखाचार्य	दशपूर्वधारी	10 वर्ष
10.	प्रोष्ठिलाचार्य	दशपूर्वधारी	19 वर्ष
11.	क्षत्रियाचार्य	दशपूर्वधारी	17 वर्ष
12.	जयसेनाचार्य	दशपूर्वधारी	21 वर्ष
13.	नागसेनाचार्य	दशपूर्वधारी	18 वर्ष
14.	सिद्धाथाचार्य	दशपूर्वधारी	17 वर्ष
15.	धृतिषेणाचार्य	दशपूर्वधारी	18 वर्ष
16.	विजयाचार्य	दशपूर्वधारी	13 वर्ष
17.	बुद्धिलिंगाचार्य	दशपूर्वधारी	20 वर्ष
18.	देवाचार्य	दशपूर्वधारी	14 वर्ष
19.	धर्मसेनाचार्य	दशपूर्वधारी	16 वर्ष
			183 वर्ष
20.	नक्षत्राचार्य	ग्यारह अंगधारी	18 वर्ष
21.	जयपालाचार्य	ग्यारह अंगधारी	20 वर्ष
22.	पांडवाचार्य	ग्यारह अंगधारी	39 वर्ष
23.	ध्रुवसेनाचार्य	ग्यारह अंगधारी	14 वर्ष
24.	कंसाचार्य	ग्यारह अंगधारी	32 वर्ष
			123 वर्ष
25.	सुभद्राचार्य	ग्यारह अंगधारी	6 वर्श
26.	यशोभद्राचार्य	दश अंगधारी	18 वर्ष

27.	भद्रबाहुआचार्य	नौ अंगधारी	23 वर्ष
28.	लोहाचार्य	आठ अंगधारी	50 वर्ष
			97 वर्ष
29.	विनयदत्ताचार्य	एक अंगधारी	5 वर्ष
30.	दत्ताचार्य	एक अंगधारी	5 वर्ष
31.	शिवदत्ताचार्य	एक अंगधारी	5 वर्ष
32.	अर्हतदत्ताचार्य	एक अंगधारी	5 वर्ष
			20 वर्ष
33.	अर्हद्बलि आचार्य	एक अंगांश	28 वर्ष
34.	माघनन्दि आचार्य	एक अंगांश	21 वर्ष
35.	धरसेन आचार्य	एक अंगांश	19 वर्ष
36.	पुष्पदन्त आचार्य	एक अंगांश	30 वर्ष
37.	भूतबलि आचार्य	एक अंगांश	20 वर्ष
			118 वर्ष
		कुल जोड़	683 वर्ष

प्रश्नावली

1. भगवान महावीर के कितने व कौन-कौन से अनुबद्ध केवली थे?
2. श्रुतकेवलियों के समय का प्रमाण बताएँ?
3. दसपूर्वधारी कितने आचार्य व कौन-कौन थे?
4. ग्यारह अंगधारी आचार्यों के नाम बताये?
5. अंगांशधारी आचार्यों के नाम लिखें?
6. भगवान महावीर स्वामी की श्रुत परम्परा कितने वर्ष तक निराबाध रूप से चलती रही?

✪✪✪✪✪

पाठ - 6

श्री सुप्रभात स्तोत्र

यत्स्वर्गावतरोत्सवे यदभवज्जन्माभिषेकोत्सवे,
यद्दीक्षा ग्रहणोत्सवे यदखिल, - ज्ञानप्रकाशोत्सवे।
यन्निर्वाणगमोत्सवे जिनपतेः, पूजाद्भुतं तद्भवैः,
संगीत स्तुति मंगलैः प्रसरतां, मे सुप्रभातोत्सवः।। 1।।

श्रीमन्नतामर किरीट मणिप्रभाभि-
रालीढपाद-युग दुर्धर कर्मदूर।
श्री नाभिनन्दन! जिनाजित! सम्भवाख्य।
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।। 2।।

छत्रत्रय प्रचल चामर वीज्यमान,
देवाभिनन्दनमुने ! सुमते! जिनेन्द्र।
पद्मप्रभारुणमणि - द्युतिभासुरांग,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।। 2।।

अर्हन् सुपार्श्व कदलीदलवर्ण गात्र,
प्रालेयतारगिरि मौक्तिक वर्णगौर।
चन्द्रप्रभ स्फटिक पाण्डुर पुष्पदन्त!
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।। 4।।

सन्तप्त कांचनरुचे जिनशीतलाख्य,
श्रेयान्विनष्ट दुरिताष्ट कलङ्क पङ्क।
बंधूकबंधुररुचे जिनवासुपूज्य,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।। 5।।

उद्दण्डदर्प करिपो विमललांग-
स्थेमत्रनन्तजिदनन्त सुखाम्बुराशे।
दुष्कर्मकल्मषविवर्जितधर्मनाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।। 6।।

देवामरीकुसुमसन्निभशान्तिनाथ,
कुन्थो! दयागुण विभूषण भूषितांग।
देवाधिदेव भगवन्नरतीर्थनाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।। 7।।

यन्मोह मल्लमदभंजनमल्लिनाथ,
क्षेमंकरावितथ शासन सुव्रताख्य।
सत्सम्पदा प्रशमितो नमि नामधेय,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।। 8।।

तापिच्छ गुच्छरुचिरोज्ज्वल नेमिनाथ,
घोरोपसर्ग-विजयिन् जिनपार्श्वनाथ।
स्याद्वाद सूक्ति मणिदर्पण वर्द्धमान,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।। 9।।

प्रालेयनील हरितारुण पीतभासं,
यन्मूर्ति-मव्यय सुखावसथं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति सप्ततिशतं जिनवल्लभानां,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।। 10।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, मांगल्य परिकीर्तितम्।
चतुर्विंशति तीर्थाणां, सुप्रभातं दिने-दिने।। 11।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, श्रेयः प्रत्यभिनन्दितम्।
देवता ऋषयः सिद्धाः, सुप्रभातं दिने-दिने।। 12।।

सुप्रभातं तवैकस्य, वृषभस्य महात्मनः।
येन प्रवर्तितं तीर्थं, भव्य सत्त्व सुखावहम्।। 13।।

सुप्रभातं जिनेन्द्राणां, ज्ञानोन्मीलित चक्षुषाम्।
अज्ञान तिमिरांधानां, नित्यमस्तमितो रविः।। 14।।

सुप्रभातं जिनेन्द्रस्य, वीरः कमललोचनः।
येन कर्माटवी दग्धा, शुक्लध्यानोग्र वहिनना।। 15।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, सुकल्याणं सुमंगलम्।
त्रैलोक्यहितकर्त्तृणां, जिनानामेव शासनम।। 16।।

प्रश्नावली

1. सुप्रभात स्तोत्र के प्रथम छंद में किसका वर्णन है?
2. सुप्रभात स्तोत्र में कितने तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है?
3. सुप्रभात स्तोत्र में कितने तीर्थंकरों के शरीर के वर्ण का वर्णन है।
4. 170 तीर्थंकरों को किस छंद में नमस्कार किया गया है।
5. सुप्रभात स्तोत्र कष्ठस्थ करके सुनाए?

✪✪✪✪✪

पाठ - 7

श्री महावीराष्टक स्तोत्र

(शिखरिणी छन्द)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावश्चि-दचितः,
समं भान्ति - ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसंतोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिवत यो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।1।।

अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पन्दरहितं,
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु में (नः)।।2।।

नमन्नाकेन्द्राली मुकुटमणि भाजालजटिलं,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्वाला शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।3।।

यदर्चाभावेन - प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः।
लभंते-सद्भक्ताः शिवसुख-समाजं किमु-तदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।4।।

कनत्स्वर्णा-भासोऽप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपति वर-सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोद्भुत-गतिर्,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।5।।

यदीया वाग्गंगा विविध-नयकल्लोल-विमला,
वृहज्ज्ञानाम्भोभि-र्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानी-मप्येषा बुधजन-मरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।6।।

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी काम सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन-विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द प्रशमपद राज्याय स जिनो, (जिनः)
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।7।।

महामोहातंक-प्रशमनपरा-कस्मिकभिषङ्,
निरापेक्षो-बन्धु र्विदित-महिमा मंगलकरः।
शरण्यः साधूनां भव-भयभृता-मुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।8।।

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छुणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्।।9।।

(इति श्री महावीराष्टक स्तोत्र)

प्रश्नावली

1. महावीराष्टक में किन भगवान की स्तुति की गई है?
2. महावीराष्टक के लेखक कौन है?
3. महावीराष्टक के किस छंद में सर्वज्ञता का वर्णन है?
4. महावीराष्टक के किस छंद में मेंढ़क की भक्ति का वर्णन है?
5. महावीराष्टक के किस छंद में उन्हें सुभट क्यों कहा गया है?
6. महावीराष्टक कण्ठस्थ याद करके सुनाये?

✪✪✪✪✪

पाठ - 8

तीर्थंकर शांतिनाथ

भगवान शांतिनाथ का जन्म, भगवान धर्मनाथ के मोक्ष जाने के बाद 3 सागरोपम +9 लाख वर्ष बीतने पर हुआ था। भगवान शांतिनाथ प्रथम तीन पद के धारी तीर्थंकर थे अर्थात् सोलहवें तीर्थंकर, पाँचवें चक्रवर्ती तथा बारहवें कामदेव थे।

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में कुरूजांगल देश की हस्तिनापुर नगरी में धर्मनिष्ठ राजा विश्वसेन राज्य करते थे। उनकी पटरानी श्री ऐरावती की कुक्षी में आप सर्वार्थ सिद्धि से च्युत होकर भादो वदी 7 को आये थे। आपका जन्म जेठ वदी 14 को, भरणी नक्षत्र मे हुआ था। तब, देवों ने साढ़े बारह करोड़ दिव्य वाद्ययंत्र बजाये तथा पिता के घर में लगातार 15 माह तक तीनों समय साढ़े 3 करोड रत्नों की वर्षा द्वारा क्रमशः गर्भ जन्म -कल्याणक मनाया।

आपकी आयु 1 लाख वर्ष, शरीर की ऊँचाई 40 धनुष वर्ण सुवर्ण के समान तथा कुमारकाल 25.000 वर्ष का था। लगभग 50000 वर्ष राज्य करते समय ही आपके भंडार में सुदर्शन चक्र उत्पन्न हुआ था और दिग्विजय यात्रा में 800 वर्ष लगे थे। आप 14 रत्न-छत्र, दंडपति, चूडामणि, काकिणी, चक्र, सेनापती, गृहपती, पुरोहित, युवती, गज, अश्व, पति मणी,

द्विपाश्व तथा 9 निधियों पद्म, काल, महाकाल, सर्वरत्न, पांडुक, नैसर्प, माणक, शंख, पिंगल के स्वामी थे। जिनकी एक-एक हजार देव रक्षा करते थे। उनकी 96000 रानियाँ, नारायणादि 64000 सुपुत्र थे। 96 करोड गायें, 84 लाख हाथी,18 करोड घोडे, 84 लाख रथ, 84 करोड पैदल सैनिक, 32,000 मुकुटबद्ध राजा, 360 रसोइया, 360 वैद्य, 360 अंगरक्षक, 32,000 नाट्यशाला, 16 हजार गणबद्ध देव, 88 हजार म्लेच्छ राजा, 1 करोड़ हल, 3 करोड गौशाला, 1 करोड़ भोजन की थाल, 1 दशांग भोग आदि विशाल वैभव चक्रवर्ती के होता है।

75000 वर्ष आयु पूर्ण होने पर आपको जातिस्मरण होकर वैराग्य हो गया तब आपने जेठ वदी 14 को सांयकाल सहस्त्राम् वन में नंदि वृक्ष के नीचे 1000 राजाओं के साथ दीक्षा ली थी। 1 वर्ष की कठिन तपस्या के बाद पौष वदी 11 को आपको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने अंतर्मुहूर्त प्रमाण समय में ही साढ़े चार योजन प्रमाण दिव्य समवशरण की रचना की। जो जमीन से 50,00 धनुष ऊपर था। तभी आपके छोटे भाई चक्रायुध ने दीक्षा लेकर प्रथम गणधर बनने का सौभग्य प्राप्त किया था। आपके कुल गणधर 35 तथा कुल मुनि 62000 थे। प्रथम गणिनी हरिषेणा को आदि लेकर 60, 300 आर्यिकाएँ थी। अर्द्धपल्य+1250 वर्ष आपका तीर्थंकाल था। जिसमें आपने अनेक देशों में विहार कर धर्ममयी उपदेश दिया। जब आयु का 1 माह शेष रहा तब आपने सम्मेद शिखर शाश्वत तीर्थराज पर 1 माह के योग निरोध के पश्चात् जेठ वदी 14 को खड्गासन से कुन्दप्रभ कूट से निर्वाण प्राप्त कर सिद्धत्व पद प्राप्त कर लिया।

तीर्थंकर भगवान शाँतिनाथ पूर्व भव में श्रीषेण राजा के रूप में आहारदान में प्रसिद्ध हुए थे। इस हुण्डावसर्पिणी काल के प्रभाव से 9-15

वें तीर्थंकर सुविधिनाथ से धर्मनाथ तक धर्म-विच्छेद रहा, पर 16 वें शांतिनाथ तीर्थंकर के उपरांत धर्म-धारा, निरंतर प्रवाहित रही अतः आज तक शांति हेतु शांतिनाथ भगवान का विधान प्रचलित है।

प्रश्नावली

1. भगवान शांतिनाथ का जन्म कहाँ और कब हुआ था? उनके कितने पद थे?
2. भगवान शांतिनाथ कितने रत्न और निधिओं के स्वामी थे?
3. भगवान शांतिनाथ को कब और कैसे वैराग्य हुआ था?
4. कुबेर ने समवशरण की रचना कितने समय में कितने प्रमाण की थी?
5. भगवान शांतिनाथ के कब कहाँ से निर्वाण की प्राप्ति हुई थी?
6. भगवान शांतिनाथ के प्रथम पुत्र तथा गणधर का क्या नाम था?
7. भगवान शांतिनाथ पूर्वभव में किस दान मे, किस नाम से प्रसिद्ध हुए?
8. भगवान शांतिनाथ विधान आज तक क्यो प्रचलित है?

✪✪✪✪✪

पाठ - 9

इष्ट छत्तीसी

प्रणमूं श्री अरंहत, दयाकथित जिनधर्म को।
गुरु निरग्रन्थ महंत, अवर न मानूं सर्वथा॥1॥

अर्थ- मैं श्री अरहन्त देव को, दयामय श्री जिनधर्म को और निर्ग्रन्थ मुनियों को ही नमस्कार करता हूँ। और मैं किसी को सर्वथा ऐसा नहीं मानता हूँ।

राग-द्वेष युत देव, मानै हिंसा धर्म मुनि।
सग्रन्थ गुरू की सेव, मिथ्याती जग में भ्रमे॥2॥

अर्थ - जो कोई राग-द्वेष सहित देवों का सच्चा देव, हिंसामय धर्म को सच्चा धर्म और परिग्रहधारी को सच्चे गुरू मानते हैं वो मिथ्यात्वी जीव जग में भ्रमण करते हैं।

बिन गुण की पहिचान जानै वस्तु समानता।
तातैं परम बखान, परमेष्ठी गुण का कहुँ।। 3।।

अर्थ - सच्चे देव, गुरू, शास्त्रों के (ठीक-ठीक) गुणों को जाने बिना प्राणी सभी को एक समान मानता है। इसलिए इस इष्ट छत्तीसी में (श्री महाकवि बुधजन) पंच परमेष्ठी के 143 मूल गुणों का वर्णन करूँगा।

अरहंतों के 46 मूलगुण

चौतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य पुनि आठ।
अनंत चतुष्टय गुण सहित, छियालीसों पाठ।। 4।।

अर्थ - 34 अतिशय, 8 प्रातिहार्य, 4 अनंत चतुष्टय-ये अरहंत के 46 मूलगुण होते हैं। अब इनका भिन्न-भिन्न वर्णन करते है।

दस जन्म के अतिशय

अतिशय रूप सुगंध तन, नाहिं पसेव निहार।
प्रियहित वचन अतीव बल, रूधिरश्वेत आकार।। 5।।
लच्छन सहसरूआठ तन, सम चतुष्क संठान।
वज्रवृषभ नाराच युत, ये जनमत दश जान ।। 6।।

अर्थ – 1. अत्यंत सुंदर शरीर 2. अति सुगंधित शरीर 3. पसीना रहित शरीर 4.मल–मूत्र रहित शरीर 5. हित मित प्रिय वचन बोलना 6. अतुल बल 7. दुग्धवत् श्वेत रूधिर 8. शरीर में एक हजार आठ लक्षण 9. समचतुरस्त्र–संस्थान 10. वज्रवृषभ नाराच संहनन, ये दस अतिशय अरहंत भगवान के जन्म से उत्पन्न होते हैं।

दस केवलज्ञान के अतिशय

योजन शत इक में सुभिख, गगन–गमन मुख चार।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहीं कवलाहार ।। 7।।
सब विद्या ईश्वरपनो, नाहिं बढ़े नख–केश।
अनिमिष दृग छाया रहित, दश केवल के वेश।। 8।।

अर्थ – 1. एक सौ योजन में सुभिक्षता, अर्थात् जिस स्थान में केवली हों उनके चारों नरफ सौ–सौ योजन में सुकाल होता है 2. आकाश में गमन 3. चार मुखों का दिखना 4. निदर्यता अभाव 5. उपसर्ग रहित 6. कवल (ग्रास) वर्जित आहार 7. समस्त विद्याओं का स्वामीपना 8. नख केशों का नहीं बढ़ना 9. नेत्रों की पलकें नहीं झपकना 10. छाया रहित शरीर–ये दस अतिशय केवलज्ञान उत्पन्न होने से प्रगट होते है।

देवकृत चौदह अतिशय

देव रचित हैं चार दश, अर्द्धमागधी भाष।
आपस मांही मित्रता, निरमल दिश आकाश।। 9।।

होत फूल फल ऋतु सबै, पृथ्वी कांच समान।
चरण कमल तल कमल है, नभतें जय-जय धान ।।10।।
मन्द सुगंध बयारि पुनि, गंधोदक की वृष्टि।
भूमि विषैं कंटक नहीं, हर्षमई सब सृष्टि।।11।।
धर्म चक्र आगे रहे, पुनि वसु मंगल सार।
अतिशय श्री अरहंत के, ये चौंतीस प्रकार।।12।।

अर्थ – 1. भगवान को अर्द्ध मागधी भाषा का होना 2. समस्त जीवों में परस्पर मित्रता होना 3. दिशाओं का निर्मल होना 4. आकाश का निर्मल होना 5. सब ऋतु के फल-पुष्प, धान्यादिक का एक साथ उत्पन्न होना 6. एक योजन तक की पृथ्वी का दर्पणवत् निर्मल होना 7. चलते समय भगवान के चरण कमल के नीचे इन्द्र द्वारा 225 सुवर्ण कमल की रचना 8. आकाश में जय जय ध्वनि होना 9. मन्द सुगन्धित पवन का चलना 10. सुगन्धमय जल की वृष्टि होना 11. पवनकुमार देवों के द्वारा भूमि का कण्टक रहित होना 12. समस्त जीवों का आनंदमय होना 13. भगवान के आगे धर्म चक्र का चलना 14. छत्र, चमर, ध्वजा, घंटादि अष्ठ मंगल द्रव्यों का साथ रहना। इस प्रकार सब मिलाकर 34 अतिशय अरिहंत आठ प्रतिहार्य भगवान के होते है।

आठ प्रातिहार्य

तरू अशोक के निकट में, सिंहासन छबिदार।
तीन छत्र सिर लसें, भामण्उल पिछवार ।।13।।
दिव्यध्वनि मुखतें खिरै, पुष्पवृष्टि सुर होय।
ढ़ारे चौसठि चमर यक्ष, बाजैं दुन्दुभि जोय ।।14।।

अर्थ – 1. अशोक वृक्ष का होना 2. रत्नमय सिंहासन 3. भगवान के सिर पर तीन छत्र का होना 4. भगवान के पीछे भामण्डल का होना 5. भगवान के मुख से दिव्यध्वनि का खिरना 6. देवताओं के द्वारा पुष्पवृष्टि का होना 7. यक्षदेवों द्वारा चौसठ चंवरों का ढुरना 8. दुन्दुभि बाजों का बजना-ये आठ प्रातिहार्य है।

चार अनन्त चतुष्टय

ज्ञान अनंत सुख अनंत, दरश अनंत प्रमान।
बल अनंत अरहंत सो, इष्टदेव पहिचान।। 15।।

अर्थ - 1. अनंत दर्शन 2. अनंत ज्ञान 3. अनंत सुख 4. अनंत वीर्य जिसमें इतने गुण हों, वह अरहंत परमेष्ठी है।

अठारह दोष

जन्म जरा तिरषा क्षुधा, विस्मय आरत खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निद्रा चिंता स्वेद ।। 16।।

राग द्वेष अरू मरण जुत, यह अष्टादश दोष।
नाहिं होत अरहंत के, सो छबि लायक मोष ।। 17।।

अर्थ - 1. जन्म 2. जरा (बुढापा) 3.तृषा (प्यास) 4. क्षुधा (भूख) 5. आश्चर्य 6. अरति (ग्लानि) 7. खेद (दु:ख) 8. रोग 9. शोक 10. मद 11. मोह 12. भय 13. निद्रा 14. चिंता 15.पसीना 16. राग 17.द्वेष 18. मरण ये 18 दोष अरहंत भगवना के नहीं होते।

सिद्धों के आठ मूलगुण

समकित दरसन ज्ञान, अगुरूलघु अवगाहना।
सूच्छम वीरजवान, निराबाध गुण सिद्ध के।। 18।।

अर्थ - 1. सम्यक्त्व 2. दर्शन 3. ज्ञान 4. अगुरूलघुत्व 5.अवगाहनत्व 6. सूक्ष्मत्व 7. अनंतवीर्य 8. अव्याबाधत्व-ये सिद्धों के 8 मूलगुण होते है।

आचार्यों के छत्तीस मूलगुण

द्वादश तप दश धर्म जुत, पालैं पंचाचार।
षट आवश्यक गुप्ति त्रय, आचारज पद सार।।19।।

अर्थ - 12 तप, 10 धर्म, 5 आचार, 6 आवश्यक, 3 गुप्ति ये आचार्य महाराज के 36 मूलगुण होते है।

बारह तप

अनशन ऊनोदर करैं, व्रत संख्या रस छोर।
विविक्त शयन आसन धरैं, काय क्लेश सुठोर।। 20।।

प्रायश्चित धर विनयजुत, वैय्यावृत स्वाध्याय।
पुनि उत्सर्ग विचारकै, धरै ध्यान मन लाय।। 21।।

अर्थ - 1. अनशन 2. ऊनोदर 3.व्रत परिसंख्यान 4. रस परित्याग 5. विविक्तशय्यासन 6. कायक्लेश 7. प्रायश्चित लेना 8. पांच प्रकार का विनय करना 9. वैय्यावृत करना 10.स्वाध्याय करना 11. व्युत्सर्ग (शरीर से ममत्व छोड़ना) 12. ध्यान करना-ये बारह प्रकार के तप हैं।

दस धर्म

क्षमा मारदव आरजव, सत्यवचन चित पाग।
संयम तप त्यागी सरव, आकिंचन तिय त्याग।। 22 ।।

अर्थ - 1. उत्तम क्षमा 2. मार्दव 3. आर्जव 4. सत्य 5. शौच 6. संयम 7. तप 8.त्याग 9. आकिंचन 10. ब्रह्मचर्य ये दस प्रकार के धर्म है।

छह आवश्यक

समता धर वंदन करे, नाना थुति बनाय।
प्रतिक्रमण स्वाध्याय जुत, कायोत्सर्ग लगाय।।23।।

अर्थ - 1. समता (समस्त जीवों से समता भाव रखना) 2. वंदना (तीनों समय सामायिक करना) 3. स्तुति (पंच परमेष्ठी की स्तुति) करना 4. प्रतिक्रमण (लगे हुए दोषों का पश्चाताप) करना 5. स्वाध्याय 6. कायोत्सर्ग (ध्यान) करना छह आवश्यक हैं।

पाँच आचार

दरशन ज्ञान चारित्र तप, वीरज पंचाचार।
गोपै मन वच काय को, गिन छत्तीस गुण सार।। 24।।

अर्थ - 1. दर्शनाचार 2. ज्ञानाचार 3. चारित्राचार 4. तपाचार 5. वीर्याचार इन पाँच आचारों का स्व-पर पालन करना-कराना (अ) मनोगुप्ति (मन को वश में करना) (ब) वचन गुप्ति (वचन को वश में करना) (स) कायगुप्ति (शरीर को वश में करना) इन तीन गुप्तियों का पालन करना इस प्रकार सब मिलाकर आचार्य के 36 मूलगुण होते हैं।

उपाध्यायों के 25 मूलगुण

चौदह पूरब को धरे, ग्यारह अंग सुजान।
उपाध्याय पच्चीस गुण, पढ़ें पढ़ावें ज्ञान।। 25 ।।

अर्थ - 11 अंग + 14 पूर्व को जो मुनिगण स्वयं आप पढ़े और अन्य को पढ़ायें, ये उपाध्याय के 25 मूल गुण हैं।

ग्यारह अंग

प्रथमहि आचारांग गति, दूजो सूत्रकृतांग।
ठाण अंग तीजो सुभग, चौथो समवायांग ।। 26 ।।

व्याख्याप्रज्ञप्ति पंचमो, ज्ञातृकथा षट आन।
पुनि उपासकाध्ययन है, अंतकृत दश ठान।। 27।।

अनुत्तर उत्पाद दश है सूत्र विपाक पिछान।
बहुरि प्रश्न व्याकरण जुत, ग्यारह अंग प्रमान ।। 28।।

अर्थ - 1. आचारांग 2. सूत्रकृतांग 3. स्थानांग 4. समवायांग 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति 6. ज्ञातृकथांग 7. उपासकाध्ययनांग 8. अन्त कृतदशांग 9. अनुत्त्रोत्पाददशांग 10. प्रश्न व्याकरणांग 11. विपाकसूत्रांग-ये ग्यारह अंग है।

चौदह पूर्व

उत्पादपूर्व अग्रायणी, तीजो वीरजवाद।
अस्ति नास्ति परवाद पुनि, पंचम ज्ञान प्रवाद।। 29 ।।

छठी कर्म प्रवाद है, सत प्रवाद पहिचान।
अष्टम आत्मप्रवाद पुनि, नवमों प्रत्याख्यान।। 30।।

विद्यानुवाद पूरब दशम, पूर्व कल्याण महन्त।
प्राणवाद किरिया बहुल, लोक बिन्दु है अन्त।। 31।।

अर्थ - 1. उत्पाद पूर्व 2. अग्रायणि पूर्व 3. वीर्यानुवाद पूर्व 4. अस्तिनास्ति प्रवादपूव 5. ज्ञानप्रवाद पूर्व 6. कर्मप्रवाद पूर्व 7. सत्यप्रवाद पूर्व 8. आत्मप्रवाद पूर्व 9. प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्व 10. विद्यानुवाद पूर्व 11. कल्याणानुवादपूर्व 12. प्राणानुवादपूर्व 13. क्रियाविशाल पूर्व 14. लोकबिन्दु पूर्व ये 14 पूर्व है।

साधुओं के 28 मुलगुण

पञ्च महाव्रत समिति पंच, पंचेन्द्रिय का रोध।
षट् आवश्यक साधुगुण, सात शेष अवबोध।।

अर्थ - पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पंचेन्द्रिय जय, छह आवश्यक, सात विशेष गुण ये साधु परमेष्ठी के 28 मूलगुण होते है।

पाँच महाव्रत

हिंसा अनृत तस्करी, अब्रह्म परिग्रह पाप।
मन वच तनतै त्यागवो, पंच महाव्रत थाप।। 32।।

अर्थ - 1. अहिंसा महाव्रत 2. सत्य महाव्रत 3. अचौर्य महाव्रत 4. ब्रह्मचर्य महाव्रत 5. परिग्रह त्याग-ये पाँच महाव्रत है।

पाँच समिति

ईर्या भाषा एषणा, पुनि, क्षेपन आदान।
प्रतिष्ठापनाजुत क्रिया, पाँचों समिति विधान।। 33।।

अर्थ - 1. ईर्या 2. भाषा 3. एषणा 4. आदान-निक्षेपण 5. प्रतिष्ठापना ये पाँच समिति है।

पंचेन्द्रिय विजय एवं सात शेष गुण

सपरस रसना नासिका नयन श्रोत्रिका रोध।
षट आवशि मंजन तजन, शयन भूमि को शोध।। 34।।

वस्त्रत्याग कचलौंच अरू, लघु भोजन एक बार।
दांतन मुख्य में ना करें, ठाडे लेहिं आहार।। 35।।

अर्थ - 1. स्पर्शन (त्वक्) 2. रसना 3. घ्राण 4.चक्षु और 5. श्रोतृ इन पाँच इन्द्रियों का वश करना सो इन्द्रिय दमन है। छह आवश्यकों का पालन करना (इनका वर्णन आचार्य परमेष्ठी के मुलगुण में वर्णन कर चुके है।)

अर्थ - 1. यावज्जीवन स्नान का त्याग 2. शोध कर (देखभाल कर) भूमि पर सोना 3. वस्त्र त्याग करके दिगम्बर होना 4. केशों का लौंच करना 5. एक बार लघु भोजन करना 6. दन्त धावन नहीं करना 7. खड़े-खड़े आहार लेना, इन सात गुणों सहित 28 मूलगुण मुनियों के होते है।

साधर्मी भवि पढ़न को, इष्ट छत्तीसी ग्रन्थ।
अल्पबुद्धि बुधजन रच्यो, हिममित शिवपुर पंथ।। 36।।

अर्थ - धर्मात्मा भव्यप्राणियों को यह हितकारी इष्ठ छत्तीसी ग्रंथ संक्षेप में अल्प-बुद्धि बुधजन के द्वारा रचा गया है जो कि मोक्षपुरी का मार्ग है।

प्रश्नावली

1. इष्ट छत्तीसी में किसका वर्णन है?
2. पंचपरमेष्ठियों के कुल कितने मूलगुण होते हैं?
3. पांचों परमेष्ठियों के मूलगुण याद करें?
4. 18 दोषों का छंद याद करें?
5. इष्टछत्तीसी के लेखक कौन है?

पाठ - 10

पूजा

प्रश्न 1. पूजा किसे कहते हैं?

उत्तर - पूज्यों की भक्ति को पूजा कहते है।

प्रश्न 2. पूज्य कौन हैं? उनके नाम बताइये।

उत्तर - नव देवता पूज्य हैं। अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिन चैत्यालय।

प्रश्न 3. भक्ति किसे कहते है?

उत्तर - पूज्य पुरुषों के गुणों में अनुराग (स्नेह) होना भक्ति हैं।

प्रश्न 4. पूजन क्यों की जाती है?

उत्तर - गुणों की प्राप्ति के लिए पूजन की जाती है।

प्रश्न 5. पूजन कैसे करना चाहिये ?

उत्तर - मन, वचन, काय (शरीर), वस्त्र, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से विशुद्ध होकर ध्यान से पूजन करना चाहिए।

प्रश्न 6. मन शुद्धि से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - पूजन करते समय मन में घर गृहस्थी संबंधी (आरम्भ-परिग्रह-खान-पान आदि) संकल्प-विकल्प नहीं आना चाहिए यही मन शुद्धि है।

प्रश्न 7. वचन शुद्धि से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - पूजन के समय मौन रहें। अर्थात गुण स्तुति के अलावा अन्य कोई अनावश्यक शब्द नहीं बोलना, वचन शुद्धि है।

प्रश्न 8. काय शुद्धि से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - सूतक-पातक आदि अशुद्धियों से रहित होना चाहिए तथा स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करें। मुख में लौंग, सुपाड़ी आदि जैसी कोई वस्तु न रखें। कुल्ला करके मुख भी साफ कर लें, नाखून में मैल ना हो यही काय शुद्धि है।

प्रश्न 9. वस्त्र शुद्धि किसे कहते है?

उत्तर - पूजा के समय जो वस्त्र धारण करते है वे वस्त्र कटे-कटे, जीर्ण-शीर्ण, गंदे, छिद्र युक्त, भडकीले (वासना जाग्रत करने वाले) जीवोत्पादक वस्त्र (सिल्क रेशम के), पारदर्शी, न हो अपितु आगमोचित हो यानि पुरुष धोती दुपट्टा तथा महिलायें साड़ी पहन कर पूजन करें।

प्रश्न 10. द्रव्य शुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर - हम जो वस्तु चढ़ा रहे हैं (अर्पित) शुद्ध प्रासुक जीव रहित तथा मर्यादित होना चाहिए।

प्रश्न 11. क्षेत्र शुद्धि से आपका क्या आशय है?

उत्तर - क्षेत्र (स्थान) शुद्धि से अर्थ है कि जिन मंदिर में सौ हाथ के अंदर अथवा यथासंभव किसी भी प्रकार की अशुद्धि (मल, मूत्र, थूक, नाक का मल) नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 12. काल शुद्धि-भाव शुद्धि का अर्थ समझायें?

उत्तर - असमय में पूजन नहीं करें तथा प्रसन्नतापूर्वक (उत्साह से)पूजन करें।

प्रश्न 13. पूजन कितने प्रकार से होती है?

उत्तर - पूजन दो प्रकार से होती है- 1. द्रव्य पूजन, 2. भाव पूजन।

प्रश्न 14. द्रव्य पूजन-भाव पूजन का अर्थ स्पष्ट करें?

उत्तर - द्रव्य सामग्री जल चंदनादि अष्ट प्रकार की सामग्री से जो भावसहित पूजन की जाती है वह द्रव्य पूजन तथा जिसमें किसी प्रकार की द्रव्य सामग्री नहीं हो मात्र भावों से गुण स्तवन करना उसे भाव पूजन कहते है।

प्रश्न 15. द्रव्य पूजन के अधिकारी कौन है?

उत्तर - समस्त श्रावक-श्राविका (गृहस्थ) इसके अधिकारी हैं।

प्रश्न 16. भाव पूजन के अधिकारी कौन हैं?

उत्तर - समस्त मुनि (निर्ग्रन्थ साधु) भाव पूजा के अधिकारी हैं।

प्रश्न 17. क्या गृहस्थ या श्रावक भाव पूजा नहीं कर सकते?

उत्तर - हाँ, कर सकते हैं परन्तु वह द्रव्यपूर्वक ही कर सकते हैं, द्रव्य समाप्त होने पर अथवा द्रव्य की संभावना न होने पर भाव पूजन कर सकते हैं।

प्रश्न 18. द्रव्य पूजा के कितने अंग है व कौन-कौन से हैं?

उत्तर - द्रव्य पूजा के 9 अंग होते हैं- अभिषेक, आह्वानन, स्थापना, सन्निधिकरण, अष्टद्रव्य से पूजन जयमाला, जाप, शंति पाठ, विसर्जन पाठ।

प्रश्न 19. अभिषेक किसे कहते हैं?

उत्तर - भगवान के न्हवन को अभिषेक कहते हैं?

प्रश्न 20. अभिषेक किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर - प्रमाद रहित, विनयपूर्वक शुद्ध जलादिक पदार्थो से अभिषेक करना चाहिए।

प्रश्न 21. आह्वानन किसे कहते हैं?

उत्तर - आह्वानन का अर्थ बुलाना। जिसकी पूजा करना होती है उसे इस प्रकार आह्वानन करते है लोंग या पुष्प हाथ में लेकर कहें-**ऊँ ह्रीं देवशास्त्रगुरू समूह! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इति आह्वानन।** इस मंत्र को बोलकर हाथ में लिये हुये पुष्प या लोंग को ठोने मे चढ़ाना चाहिए।

प्रश्न 22. अत्र अवतर-अवतर का अर्थ बतायें?

उत्तर - इसका अर्थ है कि आइये यहाँ आइये (यह सम्मानपूर्वक निवेदन है)।

प्रश्न 23. स्थापना किसे कहते हैं?

उत्तर – आह्वानन के बाद आहूत देवता को हम तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः कहकर स्थापित करते हैं अर्थात् विराजिये –आसन पर बैठिये यही स्थापना हैं। पुनः पुष्प या लोंग लेकर कहें–**ऊँ ह्रीं देवशास्त्र गुरु समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।**

प्रश्न 24. सन्निधिकरण किसे कहते है?

उत्तर – सन्निधिकरण का अर्थ है पास में होना पुनः **ऊँ ह्रीं देवशास्त्र गुरू समूह –अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं देव!** इस मंत्र को बोलकर हाथ में लिये हुये पुष्प या लोंग को ठोने मे चढ़ाना चाहिए।

प्रश्न 25. ठोना में आह्वानन की तिथि बताइये?

उत्तर – मंत्रोच्चारण पूर्वक लवंग या अखण्ड पुष्पों को तीन बार ठोना में स्थापित करें। आह्वानन, स्थापन, सन्निधिकरण के लिये प्रत्येक बार 3–3 पुष्प या लवंग स्थापित करें। कुछ लोग स्थापन के बाद ''पुष्पांजलि क्षिपेत्'' बोलकर पुष्प चढ़ाते है पर यह आगमिक पद्धति नहीं हैं। पुष्पांजलि पूजा या विसर्जन की समाप्ति में की जाती हैं। स्थापना के बाद नहीं।

प्रश्न 26. अष्ट द्रव्यों के नाम बताओं?

उत्तर – जल, चंदन, अक्षत (श्वेत चावल), पुष्प नैवेद्य, दीप, धूप, फल।

प्रश्न 27. जल चढ़ाने की विधि तथा महत्व बतायें?

उत्तर – जल का बर्तन दोनों हाथों में लेकर जल की तीन धारा देते हुए चढ़ावें जल चढ़ाने का अर्थ है–जन्म जरा (बुढ़ापा) मृत्यु इन तीनों से छुटकारा प्राप्त हो।

प्रश्न 28. चंदन चढ़ाने की तिथि तथा महत्व बतायें?

उत्तर – चंदन सदा अनामिका अँगुली से ही चढ़ाना चाहिए। चंदन चढ़ाने से संसार ताप से छुटकारा मिलता है। (अर्थात् संसार ताप नष्ट हो जाता हैं।)

प्रश्न 29. अक्षत चढ़ाने की विधि तथा महत्व बताये?

उत्तर – अक्षत मुट्ठी में बंद कर पोले हाथों से अर्पित करना चाहिए। इसके चढ़ाने का अर्थ है कि प्रभु! जिस पद का कभी विनाश न हो, वह पद हमें प्राप्त हो।

प्रश्न 30. पुष्प चढ़ाने की विधि तथा महत्व बताइये?

उत्तर - पुष्प खुले हाथों से चढ़ाना चाहिए। काम वासना को नष्ट करने के लिए चढ़ाया (अर्पित) जाता है। यही इसका महत्व है।

प्रश्न 31. नैवेद्य चढ़ाने की विधि तथा महत्व बतायें?

उत्तर - नैवेद्य को सदा थाली में (रकाबी में) रख कर चढ़ाना चाहिए। क्षुधा (भूख) रूपी रोग को नष्ट करने की भावना से इसे चढ़ाया जाता है।

प्रश्न 32. दीप चढ़ाने की विधि तथा महत्व बताइए?

उत्तर - दीप का आरती उतारते हुए चढ़ाना चाहिए। यह मोहरूपी अंधकार को नष्ट करने के लिये, केवलज्ञान रूपी परम ज्योति पाने के लिये चढ़ाया जाता हैं।

प्रश्न 33. धूप चढ़ाने की विधि तथा महत्व बताइए?

उत्तर - धूप सदैव अनामिका अंगुली, तर्जनी अंगुली व अंगुठा से धूप घट में चढ़ाना चाहिये तथा अष्ट कर्म नष्ट हो जायें तथा आत्मा के अष्ट गुणों की प्राप्ति हो इसी भावना से चढ़ाना चाहिये।

प्रश्न 34. फल चढ़ाने की विधि तथा महत्व बताइये?

उत्तर - फल की नोंक (जिस ओर डंठल हो) भगवान की ओर अथवा नीचे करके चढ़ाना चाहिए। मोक्ष फल पाने के उद्देश्य से फल चढ़ाया जाता है।

प्रश्न 35. अर्घ किसे कहते हैं?

उत्तर - पूजन के समस्त द्रव्यों के मिश्रण को अर्घ कहते हैं।

प्रश्न 36. अर्घ का अर्थ बताकर अर्पित करने का कारण बतायें?

उत्तर - जिसका मूल्य या कीमत आंकी जा सके वह अर्घ है, जिसका मूल्य न आँका जा सके वह अमूल्य है-अनर्घ है। अनर्घ (सिद्धत्व) पद की प्राप्ति के लिये चढ़ाया जाता है।

प्रश्न 37. जयमाल किसे कहते हैं?

उत्तर - जिसकी पूजन की जाती हैं उनके गुणों की स्तुति को जयमाल कहते हैं।

प्रश्न 38. जयमाल पढ़ते समय क्या विचार करना चाहिए?

उत्तर – हे प्रभो! आप धन्य है जो आपने जिस प्रकार अनेक गुणों को प्राप्त किया। वैसे गुण हमें भी प्राप्त हों इस प्रकार भावना रखना चाहिए।

प्रश्न 39. जाप किसे कहते हैं जाप करने का उद्देश्य बताइये?

उत्तर – जिनकी पूजन की जाती है उन परमेष्ठी के (णमोकार मंत्र) स्मरण करने को जाप कहते हैं। इसका उद्देश्य अपने अज्ञान, प्रमाद–कषाय भावों को तथा संचित पापों को नष्ट करना है।

प्रश्न 40. जाप कितनी बार करना चाहिए?

उत्तर – जाप 9,21,27,54 अथवा 108 बार करना चाहिए।

प्रश्न 41. शांति पाठ किसे कहते हैं?

उत्तर – प्राणी मात्र के कल्याणार्थ अथवा सुख–शांति हेतु जो पाठ किया जाता है उसे शांति पाठ कहते हैं।

प्रश्न 42. शांति पाठ क्यों करना चाहिए?

उत्तर – सच्चे भक्त का हृदय विशाल होता है। वह अपने समान सुख–शांति की भावना सभी जीवों के प्रति रखता है। संसार में सभी का कल्याण हो इस भावना से शांति पाठ करते हैं।

प्रश्न 43. विसर्जन पाठ किसे कहते हैं?

उत्तर – विसर्जन का अर्थ है समाप्ति। पूजन कार्य में हुई त्रुटियों की क्षमा भावना के साथ कार्य समाप्ति की सूचक विनय पूर्वक प्रार्थना विसर्जन पाठ है।

प्रश्न 44. विसर्जन पाठ क्यों किया जाता है?

उत्तर – पूजन के समय जो देवगण पधारे थे वे अब अपने–अपने स्थान को जावें। इस प्रकार विनय पूर्वक कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए विसर्जन पाठ किया जाता है।

प्रश्न 45. पूजन के नौ अंगों में से यदि कोई अंग कम हो तो?

उत्तर – पूजन में एक भी अंग कम रहने से पूजा अपूर्ण कहीं जायेगी। अन्य ग्रंथों में पूजा के पाँच अंग भी माने गये हैं यथा 1. पुराकर्म, 2. पूजन, 3.जाप, 4. शांतिपाठ, 5. विसर्जन।

प्रश्न 46. त्रिकाल पूजन का आशय तथा विधि बताओं?

उत्तर - प्रातः, मध्यान्ह और सांयकाल पूजन करना त्रिकाल पूजन है। प्रातः काल चंदन या अष्ट द्रव्य से, मध्यान्ह पुष्पों से तथा सांयकाल दीप, धूप से पूजन करने का शास्त्रों में वर्णन है।

प्रश्न 47. त्रिकाल पूजा का माहात्म्य बताओ?

उत्तर - प्रातः काल की पूजन पापों को नष्ट करती है, मध्यान्हकाल की पूजन लक्ष्मीदायक हैं तथा सांयकाल की पूजा से मोक्ष सिद्धि होती है।

प्रश्न 48. पूजन कितने प्रकार से हो सकती है?

उत्तर - पूजन सत्ताइस प्रकार से होती है।

प्रश्न 49. भाव रहित पूजन करने का क्या फल हैं?

उत्तर - विशुद्ध भावों से रहित होकर पूजन करने से कुछ भी फल नहीं मिलता, बल्कि खोटे कर्मों का बंध होता है।

प्रश्न 50. पूजन से किसे क्या फल प्राप्त हुआ?

उत्तर - पूजन को मात्र भावना से मेंढ़क को देव गति प्राप्त हुई। मेंढ़क मुख में कमल पुष्प लेकर भगवान महावीर की पूजन को जा रहा था। रास्ते में राजा श्रेणिक के हाथी के पैर के नीचे दब कर मर गया। पूजन की भावना मात्र से वह मर कर स्वर्ग में देव हुआ।

प्रश्नावली

1. **पूज्यों के नाम गिनायें?**
2. **पूजा किसे कहते हैं? तथा प्रकार बताएँ?**
3. **पूजा के 9 या 5 अंग लिखे?**
4. **पूजा के 9 अंगों की परिभाषा लिखे?**
5. **पूजा का क्या फल है तथा किसे प्राप्त हुआ?**

✪✪✪✪✪

पाठ - 11

आचार्य वन्दना

अथ - आपराह्णिक (पौर्वाह्णिक) आचार्य वन्दनाक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वंदना-स्तव-समेतं श्री सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(कायोत्सर्ग करें)

श्री सिद्ध भक्ति

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु-मव्वावाहं अट्ठ-गुणा-होंति सिद्धाणं।। 1।।
तव-सिद्धे णय-सिद्धे संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धेय।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि।। 2।।

इच्छामि भंते! सिद्ध भक्ति - काउस्सग्गो-कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित-जुत्ताणं, अट्ठ-विह-कम्म-विप्प-मुक्काणं, अट्ठ-गुण- संपण्णाणं, उड्ढ-लोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं, तव सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त सिद्धाणं, अतीदाणागद-वट्टमाण- कालत्तय-सिद्धाणं णिच्चकालं अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ, सुगइ गमणं, जिण-गुण -संपत्ति होदु मज्झं।

अथ (पौर्वाह्लिक) आपराह्लिक आचार्य वन्दनाक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा-वन्दना स्तव समेतं श्री श्रुतभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(कायोत्सर्ग करें)

श्री श्रुत भक्ति

कोटी-शतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीति-स्त्र्यधिकानि चैव।
पञ्चाशदष्टौ च सहस्त्र-संख्या-मेतच्छ्रुतं पञ्च पदं नमामि।। 1।।

अरहंत भासियत्थं गणहर - देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुद - णाण महोवहिं सिरसा।। 2।।

इच्छामि भंते! सुदभत्ति काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं अंगोवंग पइण्णय-पाहुडय-परियम्म-सुत्त-पढमाणिओग-पुव्वगय -चूलिया चेव सुत्तत्थय- थुइ-धम्म -कहाइयं णिच्चकालं अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइ-गमणं, समाहि-मरण, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

अथ (पौर्वाह्णिक) आपराह्णिक आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वा- चार्यानुक्रमेण, सकल-कर्म-क्षयार्थं भाव-पूजा वंदना स्तव-समेतं श्री आचार्य भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(कायोत्सर्ग करें)

श्री आचार्य भक्ति

श्रुतजलधि-पारगेभ्य :,स्व-परमत-विभावना-पटु-मतिभ्यः।
सुचरित-तपो-निधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो गुण-गुरुभ्यः।।1।।

छत्तीस-गुण-समग्गे पंच-विहाचार-करण-संदरिसे।
सिस्सा-णुग्गह - कुसले धम्माइरिए सदा वंदे।।2।।

गुरु-भत्ति - संजमेण य तरंति संसार-सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठ - कम्मं जम्मण - मरणं ण पावेंति।।3।।

ये नित्यं व्रत-मंत्र-होम निरता ध्यानाग्नि-होत्राकुला,
षट्-कर्माभिरता-स्तपोधन-धनाःसाधु-क्रिया-साधवः।
शील-प्रावरणा-गुणा-प्रहरणा-श्चन्द्रार्क-तेजोऽधिका,
मोक्षद्वार-कपाट-पाटन-भटाःप्रीणंतु मां साधवः।।4।।

गुरवःपान्तु नो नित्यं ज्ञान दर्शन - नायकाः।
चारित्रार्णव - गम्भीरा मोक्ष- मार्गोपदेशकाः।।5।।

इच्छामि भंते ! आइरिय-भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण सम्मदसंण- सम्मचरित - जुत्ताणं, पंचविहाचाराणं, आइरियाणं, आयारादिसुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं, ति-रयण-गुण-पालण-रयाणं सव्व-साहूणं, णिच्चकालं, अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइ-गमणं, समाहि-मरण, जिण-गुण-संपत्ति होदु मज्झं।

श्री आदिसागर आचार्य गुरुं चरित्र विभूषितं,
भिषजं मात्रिकं ज्योति र्विदं नैयायिकं कविम्।
निमित्तज्ञं बुधैः पूज्यं सर्वसंग विद्वरितम्,
प्रभाव शालिनं धीरं वन्दे त्रैविध्य भक्तितः।।1।।

वन्दे श्री महावीर कीर्ति सुगुरुं विद्याग्धि पर प्रदम्,
कालेद्यापि तपोनिधिं-गुण-गुणैः पूर्णम् पवित्रं स्वयम्।
नग्न्त्वादिक दुष्ट शत परिषहै र्भग्नोन यो योगिराट्,
पापान्मां कुबुद्धि कुष्ट कुहरात संसार पाथोनिधेः।।2।।

कल्पान्त काल वचना विषया गुरुणां,
लोकोत्तराऽखिल गुणा स्तवनं प्रशंसा।
स्वामिन् नमोस्तु सिरसा मनसा वचोभिः,
दद्यात् शिवं विमलसागर सूरि वर्यः।।3।।

स्वाध्याय ध्यान तप त्याग महानमूर्ति,
सिद्धान्त सार कुशलो जिनदेव भक्त्या।
महावीर कीर्ति गुरुवर्य सुपट्ट शिष्य,
नित्यं नमामि सूरि सन्मति सागराय।। 4।।

तुभ्यं नमः रविसमा तव तेजकाय,
तुभ्यं नमः शशि समुज्ज्वल वैभवाय।
तुभ्यं नमो दुरित जाल विनाशनाय,
तुभ्यं नमो गुरु 'विराग' शिव प्रदाय।। 5।।

प्रश्नावली

1. आचार्य वंदना में कितनी व कौन-कौन सी भक्तियाँ की जाती है।
2. आचार्यवदंना कहाँ और कितनी बार करना चाहिए।
3. प.पू गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज वाला छंद याद करके सुनाए?
4. सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति में किसको नमस्कार किया गया है?
5. भक्ति के अंत की लाईन याद करके भगवान के सामने रोज बोले? णिच्चकालं..................

✪✪✪✪✪

गुरु वंदना

श्रमणी आ. वियुक्तश्री

गुरुवर आप विराग हैं, राग द्वेष से दूर।
अनुरागी सबको करो, अचरज है भरपूर।।
गुरुवर श्यामल मेघ हो, गरजो बरसो नाथ।
लेकिन कभी न छोडना, मुझ अनाथ का हाथ।।

गुरु पूनम के चंद्रमा, मैं अधियारी रात।
मेरे जीवन में करो, विराग गुरु प्रकाश।।
जग तो दुख की धूप है, विराग सुख की छाँव।
साथ हमें लेकर चले, मुक्तिपुर के गाँव।।

गुरु ऐसे वैद्य हैं, करते हैं मद चूर।
आम की देते दवा, भव भ्रम करते दूर।।
हिम्मत जब-जब टूटती, कोई न देता साथ।
तब आशा के सूर्य बनें, मेरे गुरु विराग ।।3।।

शिष्य भले ही दूर हो, मन से रहता पास।
देते हैं आशीष उसे, मेरे गुरु विराग।।
स्वार्थी हैं माता-पिता, स्वार्थी सब संसार।
गुरु विराग निःस्वार्थी, जीवन के आधार।।4।।

काम सभी बना रहे, खुद रहते निष्काम।
गुरु विराग सागर मेरे, इस युग के भगवान॥
त्याग-तपस्या, साधना, करते छोड़ प्रमाद।
राजहंस जिनधर्म के, मेरे गुरु विराग ।। 5।।

नौ करोड़ में तीन कम, जितने हैं मुनिराज।
उन सबके हम भक्त बनें, कहते गुरु विराग।।
श्रावक का कर्त्तव्य है, श्रमणों का सम्मान।
पथ, संघ और परंपरा मत देखो नादान ।। 6 ।।

पानी पीना छानकर, वाणी कहिए तौल।
बार-बार फिर न मिले, जैनधर्म अनमोल।।
सूर्योदय से पूर्व जो, उठता बिना प्रमाद।
मिलता उसे अपूर्व है, सरस्वती-प्रसाद।।7 ।।

हे गुरुवर आशीष दो, पायें सम्यग्ज्ञान।
प्रज्ञा शिरोमणि आप है, हम बच्चे नादान।।
हर्षित होते हम सभी, देख गुरु मुस्कान।
हाथ उठा आशीष दें, मिल जाता वरदान ।।8 ।।

मयूर पिच्छी धारते, रखे कमंडल साथ।
आगम की भाषा कहें, मेरे गुरु विराग।।
बिना गुरु के जिंदगी, बिना ड्राइवर कार।
कब किस गड्ढे में गिरे, हो जाए बेकार ।।9 ।।

योगी बनना श्रेष्ठ है, उपयोगी है मध्यम।
दुरूपयोगी न बनो, करके काम अधम।।
पढ़ें लिखें आगे बढ़ें, लक्ष्य बने आसान।
लेकिन हम भूलें नहीं, गुरु विराग का नाम।।10 ।।

घड़ी सदा टिक-टिक करे, रूक कर ना लें श्वांस।
श्वांस सदा क्या साथ हो, करना मत विश्वास।।
काम कोई ऐसा करें, बने स्वयं पहचान।
मात-पिता और देश का, करना ऊँचा नाम।।11 ।।

अच्छे बच्चे हम सभी मंदिर आते रोज।
लड़ाई-झगड़े न करें, अच्छी रखते सोच।।
जहाँ गुरु ने जन्म लिया, बना विरागोदय।
नगर पथरिया कह रहा, गुरु विराग की जय।।12।।

मन से हिम्मत हारना, कायर का है काम।
गिर-गिर भी उठ जाना, वीरों की पहचान।
व्रत-संयम जप-नियम में, अचल मेरू गुरूदेव।
निज समान गुण दीजिए, हर कर सारे ऐब।।13।।

एक अंजलि पानी भला, दूर करे जो प्यास।
सागर का खारा सलिल, अभिमानी का साथ।
दोनों हाथों दान दें, हो मुख से गुणगान।
सुख-दुख में एक रहें, चेहरे पे मुस्कान।।14।।

सपने ऊँचे देखना, मात्र नहीं पर्याप्त।
भाग्य जगाता है सदा, व्यक्ति का पुरूषार्थ।।
नित करते गुरु वंदना, गुरु भक्ति के साथ।
उनको मिलता है सदा, गुरु का आशीर्वाद।।15।।

खिलता यह जीवन रहे, निर्विकार बेदाग।
देते शुभ आशीष रहें, मेरे गुरु विराग।।16।।

नोट : पाठशाला प्रतिदिन गुरु वंदना का पाठ करें।

✪✪✪✪✪

उपसर्ग विजेता परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागरजी महाराज द्वारा लिखित, सम्पादित एवं संकलित तथा श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित प्रवचन सत् साहित्य

सं.	नाम	मूल्य
1.	संस्कृत सर्वोदया टीका (वारसाणुवेक्खा) भाग 1-2	150
2.	संस्कृत रत्नत्रयवर्धिनी टीका (रयणसार) भाग 1-2	185
3.	संस्कृत श्रमणप्रबोधनी टीका (लिंगपाहुड)	
4.	संस्कृत श्रमण सम्बोधिनी टीका (शील पाहुड) (शास्त्रानुसार समुच्चय ग्रंथ पर चूर्णिसूत्र)	
	(शोधपूर्ण साहित्य)	
5.	संत साधना के प्रेरक प्रसंग	20
6.	परम दिगम्बर जैन मुनि (हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तमिल, अंग्रेजी)	45
7.	सर्वोदयी दिगम्बर जैन धर्म	30
8.	तीर्थंकर दिव्य दर्शन	30
9.	तीर्थंकर दर्शन	
10.	व्यसन विचार	25
11.	फूल नहीं, हैं काँटे	
12.	संस्कार सुरभि (हिन्दी, गुजराती, मराठी)	18
13.	जिनेन्द्र, दर्शन, जिनेन्द्र पूजन	10
14.	आध्यात्मिक शंका-समाधान	30
15.	आध्यात्मिक तत्व-चर्चा	40
	(चिन्तन साहित्य)	
16.	चैतन्य चिन्तन भाग-1	15
17.	चैतन्य चिन्तन भाग-2	15
18.	चैतन्य चिन्तन भाग-3	15
	(बालोपयोगी साहित्य)	
19.	बाल विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश, मराठी, कन्नड़)	10
20.	बाल विज्ञान भाग-2 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
21.	बाल विज्ञान भाग-3	10
22.	बाल विज्ञान भाग-4	10
23.	कर्म विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
24.	कर्म विज्ञान भाग-2	10
25.	कर्म विज्ञान भाग-3	10
	कथा साहित्य	
26.	नैतिक कथा मंजूषा भाग-1	30
27.	नैतिक कथा मंजूषा भाग-2	30
	(अनुवाद साहित्य)	
28.	वारसाणुवेक्खा	
29.	परमरत्नार्चना संग्रह	20
30.	सामायिक पाठ (हिन्दी, गुजराती)	10
	पद्य साहित्य	
	प्राकृत भक्ति संग्रह	
31.	भावों के विशुद्ध क्षण	15
32.	मुक्तन्जलि भाग-1	15
33.	मुक्तन्जलि भाग-2	15
34.	नव देवता निर्वाण क्षेत्र पूजा	
	(संकलित/सम्पादित साहित्य)	
35.	साधना से समाधि	20
36.	विमल नित्य पाठावलि	25
37.	आराधना	35
38.	सुभाषित संग्रह	40
39.	आप्त अर्चना	
40.	मानतुंग की अमर भक्ति (सचित्र भक्तासर)	65
41.	साधना	10
42.	अनुप्रेक्षा	10
43.	जिनागम दीप	251
44.	सम्मेद शिखर विधान	
45.	चारित्र शुद्धि व्रत	25
46.	करूणामूर्ति सन्त	100
47.	तपस्वी सम्राट	10
48.	यज्ञोपवीत विधि	
49.	साधना के सोपान	
50.	पदम् पुराण प्रश्नोत्तरी	100
51.	स्तोत्र भारती	51
52	छहढ़ाला	
53.	इष्टोपदेश	
54.	द्रव्यसंग्रह	
55.	तत्वार्थसूत्र	
	(एकांकी/नाटक साहित्य)	
56.	सत्यमित्र-सत्यदृष्टि	
57.	प्रद्युम्न हरण	

सं.	नाम	मूल्य
	(पूज्य आचार्य श्री पर आधारित साहित्य)	
58.	विरागाभिवंदन अभिनंदन	
59.	निस्पृही संत भाग-1-2	60
60.	विराग सेतु (महाकाव्य) (हिन्दी, गुजराती, प्राकृत) भाग-1	100
61.	विराग सेतु (महाकाव्य) भाग-2	
62.	संत काव्य की परम्परा में आचार्य विरागसागर	65
63.	कमल से महाकमल	
64.	घटनायें ये जीवन की	80
65.	दिगम्बरत्व के चितेरे	150
66.	विराग सिंधु की उर्मियाँ	15
67.	विराग वाटिका	41
68.	भक्ति की झंकार	25
69.	विराग काव्यांजलि	
70.	आत्मान्वेषी	
71.	विरागादर्श	
72.	विराग अर्चना	
	(पू. आचार्य श्री के प्रवचन पर आधारित साहित्य)	
73.	धर्म पीयूष	30
74.	ऐसे चलो मिलेगी राह	40
75.	दूर नहीं है मंजिल	30
76.	उड़ रे पंछी	10
77.	तीर्थंकर वर्धमान	15
78.	पहले देव-पूजा फिर काम दूजा	25
79.	तीर्थंकर ऐसे बनो	60
80.	तट की ओर	10
81.	सिर्फ दो प्रवचन	10
82.	इष्टोपदेश (प्रवचन)	
83.	मानतुंग की अमरभक्ति	150
84.	कल्याणक महोत्सव	20
85.	दान तीर्थ	20
86.	धर्म के दश सोपान	20
87.	जीवों पर दया करो, शुद्ध शाकाहार करो	20
88.	बुराईयाँ ही जेल, अच्छाईयाँ ही मुक्ति	10
89.	प्रवचन वर्षा	25
90.	कर्त्तव्यमेव कर्त्तव्यं	25
91.	श्रद्धा प्रसून	25

सं.	नाम	मूल्य
92.	मोक्ष की राहें	25
93.	विरागामृत-1	30
94.	विरागामृत-2	
95.	समाधि तंत्र (प्रवचन)	
96.	समयोचित्, शिक्षायें भाग-1	20
97.	समयोचित्, शिक्षायें भाग-2	20
98.	समयोचित्, शिक्षायें भाग-3	20
99.	विराग मंथन (हिन्दी, अंग्रेजी)	5
100.	रजत पुष्प	51
101.	कहानी सबसे पुरानी	30
102.	अक्षय निधि (हिन्दी, अंग्रेजी)	10
103.	संस्कार की लहरें	20
104.	चलो चलें प्रभु दर्शन को	30
105.	आध्यात्मिक धर्म प्रवचन	30
106.	घर-घर की कहानी	30
107.	वारसाणुवेक्खा प्रवचन	125
108.	पर्यूषण निधि	15
109.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 1. धर्मोपदेशामृतम्	200
110.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 2. दानोपदेशम्	40
111.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 3. अनित्य पञ्चाशत्	50
112.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 4-5. एकत्व सप्तति तथा यतिभावनाष्टकम्	85
113.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 6. उपासक संस्कार	60
114.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 7. देशव्रतोद्योतनम्	60
115.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 8-9. सिद्धस्तुति एवं आलोचना	85
116.	आचार्य विराग सागर साहित्य दर्शन	10
117.	मेरी भावना	
118.	फॉर यूथ प्रोग्रेस-1,2	22
119.	रत्नकरण्डक श्रावकाचार भाग-1	100
120.	सामायिक पाठ	85
121.	विराग संध्या	20
122.	स्वर्ग पुष्प	30

सं.	नाम	मूल्य
123.	षट्लेश्या प्रवचन	
124.	ऐसे बनायें घर को स्वर्ग	
125.	क्यूँ इतना अभिमान है...	30
126.	सिद्धों का खजाना	30
127.	अपने नैतिक कर्त्तव्य	30
128.	श्रुतज्ञानवर्धक विधान	20
129.	अंग-अंग से झरता बोध	

Video DVD

1. आचार्य पदारोहण द्रोणगिरि
2. राष्ट्रीय रजत मुनि दीक्षा जयन्ती, उद्गाँव
3. उपसर्ग पर उत्कर्ष की यात्रा
4. आर्यिका विशान्तश्री माताजी, समाधि
5. व्यसन मुक्ति शाकाहार अभियान
6. लोक और मध्यलोक
7. ज्योतिर्लोक और चन्द्रयात्रा
8. जेल प्रवचन
9. स्कूल प्रवचन
10. शाकाहार रैली
11. अहिंसा रैली
12. न्यायालय में प्रवचन
13. 25 दीक्षायें-श्रवणबेलगोला
14. 11 दीक्षायें-गांधीनगर
15. 8 दीक्षायें-गिरनारजी
16. 11 दीक्षायें-किशनगढ़
17. 26 दीक्षायें-उदयपुर
18. 25 दीक्षायें-जयपुर
19. 8 दीक्षायें-इन्दौर
20. स्वर्णिम जन्म जयन्ती
21. सिद्धांत एवं आध्यात्मिक प्रवचन (वारसाणुवेक्खा, सामायिक पाठ, तत्वार्थ सूत्र, पद्मनंदि पंचविंशतिका भाग-1-14)
22. मातृभक्ति
23. देश के नाम कलंक बूचड़खाने

Audio DVD

1. श्यामा के लाल
2. साधना के सरताज
3. गुरूवर का जयकारा
4. प्रवचन वर्षा (दशधर्म, सोलहकारण)
5. श्री विरागसागर नमोस्तु ते
6. करें गुरु भक्ति
7. चलें गुरुवर के द्वार
8. गीत गुरु के गायेंगे
9. जियो हजारों साल गुरुवर
10. मेरे मन वीणा के तारे
11. विराग स्वर्णोत्सव
12. रजतवर्ष मुनिदीक्षा का
13. स्वर्णिम जयन्ती याद रहेगी
14. हे सन्मति-सन्मति दो
15. प्रथम सूरि बुंदेलखण्ड के
16. पू.आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज पूजा
17. गुरू नाम की धूम मची है

साहित्य प्राप्ति स्थान

1. श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ चैत्यालय मंदिर, बताश बाजार, भिण्ड (म.प्र.) सम्पर्क सूत्रः पं. वीरेन्द्र जैन (मो. 9754803220)
2. आचार्य श्री विराग सागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज) पुष्प विहार कॉलोनी, बीना-470113, जिला-सागर (म.प्र.)
3. विराग फाउण्डेशन, द्वारा-श्री अरुण कोटड़िया, II-A विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुरा, अहमदाबाद-380013 (गुजरात)
4. श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह, 12-B वर्धमान सोसायटी, डेरी रोड मेहसाना-2 (गुजरात) सम्पर्क सूत्र-श्री भूपेन्द्र शाह (मो. 9898494914, 9829452020)
5. विराग महिल मंच, बोरीवली, मुम्बई (महा.)
6. श्रीमति पुष्पा पाटनी, 574, शांतिनगर, जैन मंदिर के सामने, गोपालपुर वायपास, जयपुर (राज.) मो. 09460765050
7. श्री मनीष पाटनी, नया बाजार, 54 धर्मकांटा के पास, अजमेर (राज) मो. 09414002306
8. श्री तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, विष्णु व्यास मोहता हॉस्पिटल के पास, मोहता चौक, बीकानेर (राज.) मो. 9314962475
9. राष्ट्रीय विराग युवा मंच, अध्यक्ष-श्री राजेश जैन अंजनी नगर, इन्दौर मो. 09425316970
10. राष्ट्रीय युवा मंच अध्यक्ष-श्री पंकज पाटनी 72, विंध्याचल नगर, एरोड्रम रोड, इन्दौर मो. 09425476665
11. डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज' 22/2, रामगंज, जिन्सी, इन्दौर-7 मो. 09826091247